# दर्पण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंक: 87वां - 88वां
संयुक्तांक

वित्त वर्ष: 2023-2024 एवं
2024-2025

भारत सरकार
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम, मध्य प्रदेश, का कार्यालय
लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002

# दर्पण

## राजभाषा हिंदी पत्रिका

अंक: 87वां - 88वां
संयुक्तांक

## वित्तीय वर्ष : 2023-24 एवं 2024-25

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

# दर्पण परिवार

**संरक्षक**

**श्री सिद्धार्थ बोन्दाडे**

**महालेखाकार**

**अध्यक्ष, प्रकाशन समिति**

श्री हरजिंदर सिंह

उप महालेखाकार (प्रशासन) व राजभाषा अधिकारी

**सदस्य**

श्री सर्वोत्तम श्रीवास्तव

उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)

श्री राम निवास जी

उप महालेखाकार (निर्माण लेखा )

**परामर्शदात्री समिति**

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

**संपादक मंडल**

| | | |
|---|---|---|
| संपादक | – | श्री विश्वरूप पाल, सहायक निदेशक (राजभाषा) |
| सहायक संपादक | – | श्री सोहन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक |
| | – | श्रीकांत सिंह, कनिष्ठ अनुवादक |
| | – | श्री गिरीश कुमार सुनकर, कनिष्ठ अनुवादक |

सिद्धार्थ बोन्दाडे
**महालेखाकार व संरक्षक**

# आशीर्वचन

कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'दर्पण' का 87 वां एवं 88 वां संयुक्त अंक प्रकाशित करते हुये मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

रोज़मर्रा के जीवन से कुछ पल चुराकर अपनी कल्पना को उड़ान देना बहुत रोमांचक होता है, पर उसे शब्दों में अभिव्यक्त कर साझा करना कुछ कठिन होता है। तथापि कुछ लोग यह साहस दिखाते है और रचनाकार कहलाते है।

'दर्पण' ने इन साहसी शिल्पकारों को एक सशक्त मंच प्रदान किया है। सबकी संवेदनाओं और अनुभवों के स्तर में बहुत अंतर पाया जाता है। जहाँ कोई स्थूल जगत के अनुभवों के प्रति संवेदनशील होता है, तो कोई अंतर्मन की गहराईयों में उतरकर आत्म–विश्लेषण करता है। इन सबका मिला जुला रूप ही एक रचनाकार को उसका विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान करता है।

'दर्पण' ने अपनी उपस्थिति का लगातार अहसास कराया है और राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में सकारात्मक वातावरण तैयार करने में अपना विशेष योगदान दिया है।

अंत में मै सभी रचनाकारों और 'दर्पण' परिवार के सभी सदस्यों को इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिये बधाई देता हूँ। आशा है 'दर्पण' निरंतर प्रगति पथ पर यूँ ही अग्रसर होता रहेगा।

(सिद्धार्थ बोन्दाडे)

हरजिंदर सिंह
**उप महालेखाकार प्रशासन**
**व अध्यक्ष, प्रकाशन समिति**

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दर्पण पत्रिका का 87वां एवं 88वां संयुक्त अंक प्रकाशित हो रहा है। राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है और पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मौलिक लेखन प्रतिभा का दर्पण होती है। पत्रिका का प्रत्येक अंक एक मील का पत्थर है जो हमारी वृद्धि को दर्शाता है, हमारी कल्पनाओं को उजागर करता है। यह रचनात्मक कौशल के व्यापक स्पेक्ट्रम को लिखने से लेकर संपादन तक और यहां तक कि पत्रिका को डिजायन करने में भी शामिल है। हमें सरकारी कामकाज में सरल एवं व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग बढाना है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार में उपयोगी तथा सार्थक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

**(हरजिंदर सिंह)**

**सर्वोत्तम श्रीवास्तव**
**उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)**

## संदेश

यह अतीव प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि कार्यालय अपनी वार्षिक हिन्द्री गृह पत्रिका 'दर्पण' के 87वां एवं 88वां संयुक्त अंक संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिन्दी का प्रचार एवं संवर्धन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और इस दायित्व के निर्वहन में 'दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन एक उल्लेखनीय योगदान है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय जनमानस की संवेदनाओं एवं मनोभावों को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिंदी ने अपने मौलिक, सरस, सुबोध, सुग्राह्य और सर्वसमावेशी गुणों के बल पर ही भारतीय समाज, संस्कृति एवं साहित्य को जीवंत बनाए रखा है।

लेखन के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करना पुलकित है। यदि वही लेखन अन्य लोगों तक उसी मनोभाव के साथ संप्रेषित होता है, तो रचनाधर्मिता के निर्वहन का आनंद द्विगुणित हो जाता है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वरचित रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति उनके उत्कट प्रेम को दर्शाता है।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि 'दर्पण' पत्रिका पाठकों को रूचिकर लगेगी तथा कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अभिवृद्धि करेगी।

मैं हृदय तल से इस अंक के समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल सहित पत्रिका के कलेवर, विन्यास एवं प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

**(सर्वोत्तम श्रीवास्तव)**

**रामनिवास जी.**
**उप महालेखाकार (निर्माण लेखा)**

## संदेश

कार्यालय की पत्रिका 'दर्पण' का 87वां एवं 88वां संयुक्त अंक प्रकाशित करते हुए मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है। आज सरकारी कार्यालयों में कार्मिक जहाँ यंत्रवत कार्य किये जा रहे हैं, वहॉ पर 'दर्पण' जैसी पत्रिका शांति के अमूल्य क्षण प्रदान करती हैं। यह अपने नाम को सार्थक करती हैं। यदि किसी कार्यालय के कार्मिकों की मनः स्थिति को आप समझना चाहते हैं तो आपको वहाँ की पत्रिका का अवश्य अध्ययन करना चाहिए। किसी भी कार्यालय की पत्रिका वहाँ के लोगों के सुख–दुख, हर्ष–उल्लास का प्रतिबिंब होती है और ऐसा इस पत्रिका के साथ भी है। यह सही मायनों में महालेखाकार कार्यालय के कार्मिकों के जीवन का दर्पण ही है। आंकड़ों की नीरस दुनिया से कुछ पल चुराकर यह हमारी अंतरात्मा को जीवंतता प्रदान करती है। कार्यालय के बाहर भी कार्मिक का जीवन हैं जो उसे लगातार चेतनावस्था में रखता है। यह पत्रिका उसी जीवन की झाँकी है।

'दर्पण' के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ और पत्रिका की प्रगति की कामना करता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं समस्त रचनाकारों तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि हमारी पत्रिका निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे।

(रामनिवास जी.)

## संपादक की कलम से ....

**सहायक निदेशक (राजभाषा)**

नया जीवन नया कलेवर, कुल ऐसा ही महसूस कर रहा हूं इस अंक को प्रस्तुत करते हुए। 'दर्पण' की विकास यात्रा काफी लंबी रही। 87वाँ अंक निश्चित रूप से इसे रेखांकित करता है। फिर भी हर बार जब वह अपने नए कलेवर को धारण करता है, ऐसा अनुभव होता है जैसा कि यह पहला ही अंक हो। संपादक के लिए यह  उस नवजात की तरह होता है जिसे देखकर परिजन अपनी पहली प्रतिक्रिया देते है। हर बार की तरह इस बार भी धडकने कुछ तेज सी हो गई हैं। इसमें समाहित रचानएँ मानो दर्पण पर पडने वाले प्रतिबिंम है, जो हमें उन हस्ताक्षरों से भी साक्षात्कार कराते हैं जिनका वह प्रतिबिंब है। उनका व्यक्तित्व हमारे ऑखों के सामने मूर्तरूप लिए खड़ा हो जाता है। मुझे आशा है ऐसे रचनाशील व्यक्तियों की कृतियां निश्चित रूप से आपकों प्रभावित करेंगी। आपकी प्रतिक्रिया उनकों और अधिक उर्वरता प्रदान करेगी। चाहे वह प्रशंसा हो या फिर समालोचना, दोनो ही रचनाकार और अधिक सृजनशील बनाते हैं।

इस अंक को जरूर पढिए ताकि हम आपकी कसौटी पर खरा उतर सकें। मैं 'दर्पण' परिवार के संरक्षक माननीय महालेखाकार महोदय के प्रति विशेष रूप से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं जिन्होंने समय–समय पर हमें ना केवल प्रेरणा दी बल्कि इस मार्ग के पथिक के लिए ध्रुवतारा बनकर मार्गदर्शन भी किया।

मैं मानता हूॅ कि 'दर्पण' परिवार सिर्फ माननीय संरक्षक महोदय, अध्यक्ष व सदस्यगण प्रकाशन समिति, राजभाषा कार्यान्वयन समिति व प्रारामर्शदात्री समिति के सदस्यों तथा संपादक मण्डल के सदस्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उसका दायरा इससे कहीं बडा है। हमारे प्रिय रचनाकार साथी और उनको पढने वाले हमारे प्रिय पाठकगण भी हमारे परिवार के ही सदस्य है, जिनके बिना 'दर्पण' की कल्पना करना भी असंभव है। मैं इन सभी के प्रति हृदय से आभारी हूॅ।

अंत में मैं हमारे उन महान साथियों के प्रति नतमस्तक हूॅ जिन्होंने कभी 'दर्पण' प्रकाशित करने के विषय में सोचा होगा और उसकी नींव रखी थी। सचमुच वह कितना सुखद क्षण रहा होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी कलम को विराम देता हूॅ।

शुभकामनाओं सहित ।

आपका

**(विश्वरूप पाल)**

## अनुक्रमणिका


(i) पत्रिका परिचय

(ii) 'दर्पण' परिवार

(iii) माननीय महालेखाकार का आशीर्वचन

(iv) उप महालेखाकार (प्रशासन) व राजभाषा अधिकारी का संदेश

(v) उप महालेखाकार (लेखा एवं व्ही.एल.सी.) का संदेश

(vi) उप महालेखाकार (निर्माण लेखा) का संदेश

(vii) संपादक की कलम से


### गद्य–गरिमा


1. मेरा उत्तर पूर्व क्षेत्र का भ्रमण – श्री सर्वोत्तम श्रीवास्तव, उ.म.ले.
2. कलायें – संस्कृति एंव परंपराओं की संवाहक – श्री मंदीप कुमार वर्मा, स.ले.अ
3. बढती रफ्तार, थमती जिदंगी! – सुश्री दीक्षा यादव, लेखापाल
4. विलुप्त हो रहे गॉव और उनकी चीजें – श्री सुगंध कुमार वर्मा, स.ले.अ.
5. अतरंगी दोस्ती – सुश्री मिलिन्दा शिरपुरकर, व.ले.अ.
6. भारतीय दर्शन एक संक्षिप्त परिचय – श्री गौरव आनंद, ले.पा
7. कभी किसी को छोटा समझकर उपहास ना करें– श्री राजेश रजक, सहा. पर्यवेक्षक
8. प्रतिस्पर्धा ! एक व्यंग्य – श्री श्रीकांत सिंह, कनि. अनुवादक
9. एक अविस्मरणीय घटना– सुश्री रंजना गजभिये, स.ले.अ
10. रक्षा औद्योगिक गलियारा एवं भारत– श्री रजनीश कुमार, स.ले.अ.
11. लाइब्रेरी की व्यथा– श्री लोकेश पाल, वरि.लेखापाल
12. साहस और दृढ़ता– जीवन का महत्वपूर्ण गुण– श्री कमलेश चांदवानी, स.ले.अ.


### काव्य-कानन


13. सीरत – श्री गिरीश कुमार सुनकर, कनिष्ठ अनुवादक
14. यादें – श्री मधुकर सिंह, स.ले.प.अ.
15. संघर्ष ही जीवन है – सुश्री साक्षी, डी.ई.ओ.
16. ख्वाहिशें – श्री सचिन कुमार भारतीय, ले.पा.
17. प्रेम पथ – श्री संजय कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवादक
18. माँ कैसी होती है? – श्री सुगंध कुमार वर्मा, स.ले.अ.
19. माँ – श्री सजल पटेल, ले.पा.
20. भोज का न्योता – श्री सोहन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
21. अव्याप्त – श्री लोकेश पाल, वरि.ले.पा
22. विश्वगुरु भारत – श्री अमन कुमार, स.ले.अ.


### कार्यालयीन –गतिविधियाँ


23. 'दर्पण' आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक (84वां–85वां–86वां–संयुक्तांक) का विमोचन कार्यक्रम
24. हिन्दी पखवाडा 2024

# मेरा उत्तर–पूर्व का भ्रमण

**श्री सर्वोत्तम श्रीवास्तव**
**उप महालेखाकार (लेखा एवं वी.एल.सी.)**

हमारे देश के उत्तर–पूर्व का भाग जिसमें कुल आठ राज्य–असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड, और सिक्किम शामिल हैंः अछूती और अद्वितीय प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण, अत्यन्त सुंदर एवं चित्ताकर्षक है यह भूभाग बहुत विशाल और कहीं–कहीं अत्यंत दुर्गम भी है, इसलिए एक यात्रा में इन सब को देख लेने की अभिलाषा को पूरा करना असंभव तो नहीं, किन्तु कठिन अवश्य है.

मेरी बहुत दिनों से अभिलाषा थी कि उत्तर पूर्व के कुछ क्षेत्रों का भ्रमण किया जाये . अतएव मैंने असम, मेघालय, और त्रिपुरा राज्य के कुछ स्थानों के भ्रमण का कार्यक्रम बनाया, इसके लिए उत्तर–पूर्व का प्रवेश द्वार कह जाने वाले असम राज्य की राजधानी गुवाहटी जाना अनिवार्य है मैं अपने गृह नगर प्रयागराज से डिब्रूगढ राजधानी एक्सप्रेस पर सवार होकर सायंकाल आठ बजे के लगभग गुवाहाटी पहुंचा, गुवाहाटी इस भूभाग का सबसे बडा और आधुनिक नगर है जो उद्योग, व्यापार वाणिज्य, संस्कृति और कला का प्रमुख केंद्र है। असम की विश्व प्रसिद्ध चाय और मसाले यहाँ बहुतायत से बिकते हुए देखे जा सकते हैं।

रा़त्रि विश्राम के पश्चात अगले दिन प्रातः काल हमने गुवाहाटी के नीलांचल पर्वत पर स्थित प्रसिद्ध शक्तिपीठ माता कामाख्या देवी के दर्शन की योजना बनाई थी, किन्तु प्रातः काल उठकर, स्नानादि से निवृत्त होकर पहले से बुक की गई टैक्सी में बैठे तो चालक महोदय ने बताया कि उस दिन महामहिम राष्ट्रपति महोदया भी माता कामाख्या देवी के दर्शनों के लिए आई हुई हैं और आज उधर जाना निरापद न होगा, चालक महोदय एक बंगाली भद्रजन थे, अतः उनके सद्परामर्श पर हम सीधे बादलों के घर कह जाने वाले मेघालय की राजधानी शिलाँग की ओर चल पड़े, गुवाहाटी से शिलोंग की दूरी लगभग एक सौ किलोमीटर है, जो चार लेन का राष्ट्रीय राजमार्ग है (NH6) जिसके माध्यम से गुवाहाटी से शिलांग तक की दूरी बड़ी ही सुगमता से तीन से साढ़े तीन घंटे में पूरी की जा सकती है। मार्ग में कुछ अत्यंत मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखने को मिल जाते है। यद्यपि कि विवेकहीन तरीके से उत्खन्न के कारण पहाड़ों पर विद्रूप और अमर्ष कर देने वाले दृश्य भी दृष्टिगोचर होते हैं मार्ग में खाने–पीने के लिए भोजनालय और जलपानगृह बहुतायात से उपलब्ध हैं, जिनमें शाकाहारियों के लिए "जीवा" नामक रेस्तरां बहुत प्रसिद्ध हैं।

शिलॉंग के मार्ग में ही शिलोंग से कुछ पहले उमियम नामक एक बहुत ही विशाल झील दिखाई पड़ती है, जिसे स्थानीय बोली में बारा पानी के नाम से भी जाना जाता है, इसे 1960 के दशक के आरम्भ में उमियाम नदी पर बांध बनाकर बनाया गया है। झील और बांध का मुख्य जलग्रहण क्षेत्र 225 वर्ग किलोमीटर (87 वर्ग मील) में फैला हुआ है। यह झील बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करती है, यहाँ पर नौकायन के लिए मेघालय के पर्यटन विभाग द्वारा मोटर चालित नौकाओं की व्यवस्था है, जिसके लिए कभी–कभी बहुत लंबी प्रतीक्षा भी करनी पड़ती है, किन्तु यह नौकायन से मिलने वाले आनन्द में तुच्छ है, हमने जाते हुए इस झील को देखा और लौटते समय नौकायन का आनन्द लेने की सोचते हुए सीधा आगे बढ़ गया , यहाँ यह कहना समीचीन होगा कि शिलोंग से वापसी में सूर्यास्त के समय हमने यहाँ नौकाविहार का भरपूर आनन्द उठाया।

शिलॉंग एक बहुत ही सुन्दर पर्वतीय स्थल है जहाँ पर प्रकृति ने भरपूर सुषमा बिखेरी हुई है यह एक इसाई बाहुल्य राज्य है यहाँ पर बड़े सुन्दर चर्च स्थान–स्थान पर बने हुए हैं और प्रत्येक रविवार को यहाँ सार्वजनिक अवकाश के कारण सभी व्यापारिक उपक्रम बंद रहते हैं और प्रार्थना के लिए लोग गिरजाघरों में सोत्साह जाया करते हैं, यहीं पर वायु सेना का पूर्वी कमांड का मुख्यायलय भी है, जहाँ पर वायुसेना द्वारा एक संग्रहालय स्थापित किया गया है जो सामान्य दर्शकों और पर्यटकों के लिए एक निश्चित समय पर खुला रहता है, हमने वैध परिचयपत्र के साथ इस संग्रहालय का भ्रमण किया जहाँ पर स्थानीय निवासियों, उनकी संस्कृति, वस्त्र, लोक–कलाओं के साथ–साथ वायुसेना से संबंधित अति महत्व के चित्र, आयुध और प्रक्षेपास्त्रों के नमूने देखे। संग्रहालय के भीतर स्थित विपणन केन्द्र से हमने स्मृति के रूप में कुछ वस्तुऐं भी क्रय की। हमने यहाँ लेडी हैदरी पार्क, डान बास्की म्यूजियम, एलीफैंटा जल प्रपात, चर्च आदि देखे, बहुत ऊंचाई पर स्थित शिलोंग व्यियु पॉइंट जो कि सैन्य क्षेत्र में स्थित है, से शिलॉंग नगर का एक विंहगम दृश्य दिखाई पडता है जो वहों जाने वाले हर पर्यटक के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है, का भी अनुभव लिया।

शिलॉंग घुमाने के बाद चालक के ही परामर्श पर हम चेरापूंजी जिसे स्थानीय बोली में सोहरा कहा जाता है, के लिए निकल पडे, चालक से बातचीत मे एक बात यह पता चली कि ''च'' का उच्चारण यहॉ ''श'' के रूप में किया जाता है, चेरापूंजी एक समय में विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाला क्षेत्र था जो कि अब वहीं से कुछ दूरी पर स्थित ग्राम ''मौसिनराम'' में विस्थापित हो गया है चेरापूंजी के मार्ग में कई अद्भुत और मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखने को मिलते है, यहॉ पर कई प्राकृतिक गुफाएं है जिन्हे देखा यहॉ से बांगलादेश की सीमा लगी हुई है एक स्थान पर एक बहुत विशाल पहाडी चट्टान शिवलिंग के रूप में दर्शित होती है जिस पर प्राकृतिक रूप से एक झरना जलाभिषेक करता है, यह दृश्य भगवान शंकर के किसी भी भक्त का अभिभूत कर देने के लिए पर्याप्त है।

इसके अतिरिक्त हमने डबल लिविंग रूट ब्रिज देखा जो कि जीवित जड पुल मानव नवाचार और प्राकृतिक आश्चर्य का एक सरल मिश्रण है। चेरापूंजी में घूमने के लिए शीर्ष 10 स्थानों में से एक ये पुल स्थानीय लोगों द्वारा दशकों से जीवित पेडों को बांधकर बनाए गए हैं। इनमें से सबसे अच्छा पुल उमशियांग डबल–डेकर रूट ब्रिज है जो चेरापूंजी के बाकी पर्यटन स्थलों में से अब तक का सबसे अच्छा स्थान है जहां पर्यटक घूमना पसंद करते हैं। हमें भी यह स्थान बहुत ही रूचिकर लगा और इसका पूरा आनंद उठाया ।

चेरापूंजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक, प्रसिद्ध नोहकलिकाई झरने की यात्रा के बिना मेघालय की यात्रा अधूरी है। हरे–भरे जंगल के बीचोबीच स्थित यह झरना 1,115 फीट की ऊंचाई से नीचे गिरता है जो अभिभूत करने वाला दृश्य उपस्थित करता है। इसी प्रकार, मार्ग में ही सेवेन सिस्टर्स जल प्रपात देखना भी विस्मयपूर्ण और आल्हादकारी अनुभव है।

अरवाह गुफाएं मेघालय में नई खोजी गई गुफाओं में से एक है। इसलिए, इस अनूठी गुफा को देखने के लिए हम यहाँ आये, यहाँ गुफा चूना पत्थर संरचनाओं से समृद्ध है, और इसमें लाखें वर्ष पुराने समूद्री जीवाश्म मौजूद हैं हरे –भरे लॉ शायना जंगल में स्थित, पुरातत्वविद और खोजकर्ता केवल ऐसी जगह का सपना देखते है। हमें गुफा में प्रवेश करते समय भय का अनुभव हुआ किन्तु जैसे–जैसे आगे बढते गए, यह एक रोमांचकारी अनुभव सिद्ध हुआ।

यों तो पूरे उत्तर–पूर्व में शाकाहारी भोजन की खोज एक दुरूह कार्य है, तथापि कुछ स्थानों पर शाकाहारी भोजन मिल जाता है यहाँ पर सूर्यास्त के बाद लगभग सारी गतिविधियां ठप सी पड जाती है बेहतर हो कि आप सात साढे सात बजे तक भोजन आदि करके होटल के अपने कमरे में लौट आयें क्योंकि इसके बाद आप के पास करने को कुछ रह नहीं जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त मेघालय में बहुत से दर्शनीय स्थल भरे पडे है किन्तु समयाभाव के कारण वहां न जाकर हम गुवाहाटी लौट आए हमने कामाख्या देवी मंदिर के समीप स्थित एक होटल में रात्रि विश्राम के पश्चात बहुत तडके तीन बजे ही उठकर स्थानादि से निवृत्त होकर चार बजे मंदिर परिसर में चले गए वहाँ दर्शनों के लिए कए सामान्य पंक्ति लगती है और विशिष्ट दर्शन के लिए 501/– रूपये का टिकट मंदिर न्यास द्वारा निर्धारित है हम लोग टिकट लेकर प्रतीक्षालय में बैठ कर अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगे वहाँ दर्शन के उपरांत नीलाचल पर्वत की चोटी पर स्थित भुवनेश्वरी माता के मंदिर में गए। ऐसी मान्यता है कि कामाख्या देवी के दर्शनों के उपरांत भुवनेश्वरी माता के दर्शन अवश्य करने चाहिए पर्वत कि चोटी पर स्थित होने के कारण इस मंदिर के प्रांगण से बृह्मपुत्र नदी और गुवाहाटी नगर का नयनाभिराम विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

गुवाहाटी के अन्य दर्शनीय स्थलों को देखने के बाद हम ट्रेन से त्रिपुरा राज्य की राजधानी अगरतला के लिए रवाना हुए अब असम को रेल मार्ग से अगरतला से जोड़ दिया गया है। यह रेलमार्ग अत्यंत दुर्गम पहाडी क्षेत्रों से गुजरता अनेक सुरंगों, पुलों और चमत्कृत कर देने वाले प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है, मार्ग में पड़ने वाले छोटे–छोटे स्टेशनों की सुंदरता देखते ही बनता है।

अगरतला त्रिपुरा की राजधानी होने के कारण वहाँ का सबसे बड़ा नगर है, वहॉ के दर्शनीय स्थलों में सर्वप्रथम नाम उज्जयंत पैलेस का आता है जो कि शुभ श्वेत रंग की एक बहुत ही विशालकाय और सुन्दर प्रासाद है, यह राजप्रासाद पूर्व में त्रिपुरा के राजा का निवास था जिसे अब एक सुरूचिपूर्ण संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है, जिसमें त्रिपुरा राज्य के सांस्कृतिक, भौगोलिक, जैव विविधताओं लोक कलाओं, वाद्यों, स्थानीय उत्पादों आदि को भव्य रूप से प्रदर्शित किया गया है, इस पैलेस को महाराजा राधा किशोर माणिक्य ने बनवाया था। इस प्रासाद के प्रवेश द्वारा के ठीक बाहर तक ऊँचे चबूतरे पर वीर हुतात्मा खुदीराम बोस की एक विशालकाय कांस्य प्रतिमा आरूढ़ है जो कि अमर स्वातंन्त्र्य सेनानी के प्रति देशवासियों की अगाध श्रद्धा का जीवान्त प्रमाण है, इसके अतिरिक्त यहाँ के दर्शनीय स्थलों में नहेरू उद्यान, साइंस सिटी, भगवान जगन्नाथ मंदिर आदि भी शामिल हैं।

अगले दिन हम टैक्सी लेकर अगरतला से त्रिपुरा के गोमती जिले में स्थित उदयपुर नामक कस्बे में पहुंचे जो कि वहां से लगभग 55 किमी दूर है। यहाँ से होकर गोमती नामक नदी प्रवाहमान है, यह नगर त्रिपुर सुंदरी मंदिर के लिए प्रसिद्ध है जिसे स्थानीय लोग माताबाड़ी मंदिर भी कहते हैं, यह 51 शक्तिपीठों में से एक है। यह गोमती जिले का मुख्यालय भी है। इस मंदिर का निर्माण महाराजा धन्य माणिक्य देबबर्मा ने सन 1501 ईसवी में करवाया था। मंदिर के पार्श्व में एक विशाल सरोवर है जिसे कल्याण सागर के नाम से जाना जाता है। भुवनेश्वरी मंदिर यहां का एक और प्रसिद्ध मंदिर है, जो बंगलादेश की सीमा से सटा हुआ है। हमने इन सभी तीर्थस्थलों का भ्रमण किया और दर्शन पूजन किया।

उदयपुर को ''झील शहर'' के रूप में भी जाना जाता है और यहां कई खूबसूरत झीलें यथा बिजॉय सागर, जगन्नाथ दिघी, अमर सागर बांग्ला कवि के महान और कल्याण सागर है। इसमें एक राष्ट्रीय पुस्तकालय भी है जिसका नामकरण काज़ी नजरूल इस्लाम के नाम पर '' नज़रूल ग्रंथागार ''रखा गया है। यहाँ पर एक वृहद प्राणिउद्यान भी स्थित है जहाँ विविध प्रकार के वन्य प्राणी संरक्षित हैं, हम ने टिकट लेकर इस प्राणिउद्यान का भ्रमण किया और वहाँ संरक्षित सभी प्रकार के दुर्लभ और विशिष्ट वन्यजीवों का देखा।

अगले दिन हम '' नीरमहल '' देखने के लिए गए, इस महल को ''द लेक पैलेस ऑफ त्रिपुरा '' और ''जल महल '' के नाम से भी जाना जाता है । यहा चारों ओर से एक वृहदाकार झील से घिरा हुआ है सम्भवतः इसी कारण से इसे तैरता हुआ महल भी कहा जाता है। इस महल का निर्माण राजा बीर

बिक्रम किशोर मणिक्य बहादुर ने करवाया था। कहा जाता है कि इस महल का निर्माण उन्होने ग्रीष्मकाल के समय में रहने के लिये करवाया था। इस महल तक पहुँचने के लिये नौका के द्वारा ही जाया जा सकता है। नौकाओं का संचालन राज्य पर्यटन निगम द्वारा प्रंबधित है यह महल अत्यंत भव्य, सुन्दर औश्र चित्ताकर्षण है इसकी सुन्दरता अद्वितीय है महल के भीतर एवं कैफेटेरिया और विक्रय केन्द्र भी है जहाँ से हमने बांस की बनी हुई कुछ सुन्दर कलाकृतियाँ और सजावटी सामान क्रय किये तथा डाब (नारियल–पानी) एवं अन्य शीतल पेय का आनन्द उठाया, यहां के लोग बहुत सरल एवं अतिथि प्रिय है और पर्यटकों से अच्छा व्यवहार करते है नीर महल देखने के बाद हम अपने गंतव्य की उड़ान पकड़ने के लिये छोटा किन्तु सुव्यवस्थित विमानपत्तन है जो कि अत्याधुनिक यात्री सुविधाओं से परिपूर्ण और मनोहारी है।

इस प्रकार उत्तर–पूर्व के कुछ हिस्से की हमारी यात्रा संपन्न हुई जो के चिरस्मरणीय रहेगी उत्तर–पूर्व के निवासियों का आतिथ्य सत्कार हमें सदैव वहाँ जाने के लिये अभिप्रेरित करता रहेगा।

# कलाये– संस्कृति एवं परंपराओं की संवाहक

**मंदीप कुमार वर्मा**
**सहायक लेखा अधिकारी**

हमारा देश प्राचीन काल से ही विभिन्न कलाओं, संस्कृतियों एवं हस्तशिल्पो से समृद्ध रहा है। मनुष्य की वह रचनाएं जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला कहलाती है। कलाओं का एक तात्विक अंतः सम्बंध होता है जो उन्हे परस्पर निकटता प्रदान करता है। कला का प्राथमिक तथा मुख्य लक्ष्य सौन्दर्य की अनुभूति करना होता है। किसी भी कलाकृति में यह सौन्दर्य रूप से माध्यम से प्रकट होता है, जिसकी प्रेरणा किसी भी कलाकार को अपने चारों और फैली हुई सृष्टि अर्थात संस्कृति तथा परंपराओ द्वारा मिलती है। कुछ कलाकार इसे यथावत प्रकट करते है तो कुछ कलाकार यथावत प्रकट न करके कुछ परिवर्तन के साथ प्रकट करते है। हमेशा से ही भारत की कलाएं और हस्तशिल्प इसकी सांस्कृति और पारंपरिक तत्वों को जीवित रखने और उसको अभिव्यक्त करने का माध्यम रही है। देश भर में फैले राज्यों की आंचलिक पहचान वहाँ प्रचलित कला के भिन्न–भिन्न रूपों अर्थात लोक कलाओं में दिखाई देती है। जिस कला में लोक संस्कृति एवं लोकाचार ध्वनित हो वह कला लोककला कहलाती है, जिस प्रकार साहित्य में समाज की छवि दिखाई पड़ती है उसी प्रकार कलाओं में संस्कृति एवं परम्परा की । संस्कृति ने कला को जन्म दिया या कला ने संस्कृति को विकसित किया, यह प्रश्न उसी प्रकार से जटिल है जिस प्रकार बीज और वृक्ष में से दोनों में पहले प्रकाश में कौन आया, यह जानना हमेंशा एक प्रश्न बना रहा है। संस्कृति से पहले कला प्रकट हुयी और कला के पूर्व सांस्कृति भावनाओं ने जन्म लिया इतना ही कहना सही होगा। आदिकाल में मानव नें अपनी योग्यता के अनुसार जो कलात्मक विकास किया वह पुरातत्व की खोज के द्वारा आज सबके सामने है समय के साथ–साथ मानव में जितनी सांस्कृतिक भावनायें उत्पन्न हुई उतनी ही कलात्मक प्रगति भी उसने की। कला के द्वारा ही मानव का सांस्कृतिक विकास हुआ। कला ने ही मानव को पशुवृत्ति से पृथक किया तथा उसमें वह सौन्दर्य बोध दिया जिसके कारण मनुष्य ने इस सुन्दर जगत की रचना की। बड़े–बड़े नगर, सुन्दर घर, आदि अनेक प्रवृत्तियाँ मनुष्य के कलात्मक विकास का प्रतीक हैं और इन्हीं प्रतीकों के कारण मनुष्य की संस्कृति का बोध होता चला आया है। धार्मिक मूल्य, पौराणिक कथाएं, दैनिक जीवन से सम्बन्धित क्रियाकलाप प्रतीकों आदि से सम्बन्धित दृश्यों को कला में बनाया जाता है। जिससे वहाँ की स्थानीय संस्कृति विशेष का बोध होता है।

लोक–कलाओं द्वारा अंकित समस्त कलाएँ जो उनकी परम्पराओं, विश्वास तथा संस्कृति से जुड़ी होती हैं वही कलाएँ विविध रूपों में प्रदर्शित की जाती हैं। चित्रकार चित्रों के द्वारा, संगीतकार नाद के माध्यम से नर्तक नृत्य के माध्यम से तथा अभिनेता अभिनय के माध्यम से अपनी कला को प्रदर्शित करता है और सभी में अपने–अपने अनुशासनों अथवा विधाओं से सम्बन्धित विशिष्टता के साथ वहाँ की संस्कृति अवश्य प्रतिबिम्बित होती है।

भारतीय संस्कृति में अनिवार्य अनुशासन के रूप में लोक कलाओं का अस्तित्व रहा है। जिसकी अहम भूमिका लोगों के आचार–व्यवहार, परम्परा तथा संस्कृति में दिखाई देती है जो कि प्रत्येक कलाकाल की कला में प्रदर्शित होती है। आदिकाल के गुहा चित्रों से लेकर वर्तमान में हो रहे भित्ति चित्र, कागज कैनवास तथा कपड़ा आदि विभिन्न पटलों पर संस्कृति एवं परम्पराओं के दर्शन हो रहे हैं। यहाँ तक कि वस्त्र कला में भी भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के प्रभाव देखे गये हैं। जिसका सबसे ज्यादा प्रभाव लोक कलाओं में देखा जा सकता है।

लोक कला एक ऐसी परम्परा है, जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी अभिप्रायों से लेकर धरातल और रचना प्रक्रिया में क्षण या बदलाव की गति अत्यन्त धीमी होती हैं, या कहें तो न के बराबर, क्योंकि लोक कला लोकात्मक होती है। लोकात्मक अर्थात् स्वच्छ, सहज और सरल जो सोच समझ कर नहीं बनायी जाती बल्कि रस, आनन्द और सौन्दर्य से भरपूर सस्कृति तथा परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए स्वयं बन जाती है और यह जन मानस में रच–बस जाती है।

लोक जीवन के रीति–रिवाज, व्रत–अनुष्ठान संस्कार, पर्व, त्यौहार आदि लोक कला में महती भूमिका निभाते हैं क्योंकि लोक चित्रकला में शिक्षा–दीक्षा की आवश्यकता नहीं होती बल्कि लोग इस कला को परम्परागत तौर पर इन्हीं त्यौहारों तथा अनुष्ठानों से प्रेरित होकर स्वयं सीख जाते हैं, जैसे ''अपनी मातृ भाषा सभी को स्वतः आ जाती है, किसी अभ्यास या शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है ''। कलायें प्राण आयाम की तरह अनिवार्य रूप से हमारे जीवन का हिस्सा बन जाती हैं और उल्लास से परिपूर्ण कर देती हैं। संस्कृति एवं परम्पराओं को लोक कला में मूलतः देखा जा सकता है। लोक कला समाज में उपस्थित लोगों तथा स्वयं समाज के लिए विकास एवं उल्लास का कारण है। लोक कला के द्वारा समाज की पहचान होती है तथा उस समाज की संस्कृति एवं पौराणिक कथाओं का पता चलता है। ताजमहल इण्डामित का प्रतीक, कोणार्क के मन्दिर हिन्दू संस्कृति के प्रतीक तथा वर्तमान भवन निर्माझा की कला यूरोपीय संस्कृति को परिलक्षित कर रही है। मनुष्य ने अपनी संस्कृति के चिन्ह कला के रूप में छोड़े है और निरंतर मानव समाज अपनी संस्कृति का इतिहास कला के माध्यम से ही छोड़ता रहेगा। वस्त्रों में विभिन्न प्रकार की रूपरेखा, अलंकरण आदि का अंकन, आभूषणों के विभिन्न आकार तथा प्रत्येक उपयोगी वस्तुओं का भव्य रूप कला ने ही हमको दिया है। सभी मानव निर्मित वस्तएँ मुख्यतः कला की ही देन है, इनके सुन्दर आकार प्रकारों में कला विद्यमान है।

यदि कला न होती तो आज भी मानव जंगलों व गुफाओं में रहता, वृक्ष की छाल, पत्ते आदि से ही शरीर ढकता, परन्तु समयानुसार बदलती मानव सोच, संस्कृति व परम्परा के कारण मानव विकसित होता चला गया। कला के विभिन्न रूप यहाँ तक बोलना, खाना चलना, बैठना, उठना, सोना आदि में संस्कृति एवं परम्पराओं का समावेश दिखाई देता है। प्रत्येक मानव अपनी संस्कृति एवं परम्परा को संजाये हुए है, जो कि उसके आचार–विचार, बोली–भाषा व वेशभूषा में अवश्य देखने को मिलती है।

समय–समय पर भारत की समृद्ध संस्कृति और शासको के सौन्दर्यबोध तथा कला संरक्षण के कारण यहाँ बहुत कुशल कारीगर हुए और उन्होंने अत्यन्त भव्य कलाकृतियों का निर्माण किया फिर चाहे वह कलाकार किसी भी माध्यम में क्यों न हो। अलग–अलग विधाओं में इन कुशल कारीगरों ने अपनी संस्कृति तथा परम्पराओं को उजागर किया है जो यहाँ के प्रत्येक अलंकरण में नवीनता तथा विशिष्टता है, वह अन्य कहीं बेमुश्किल ही दिखाई देती है, इसका प्रमुख कारण है भारत की संस्कृति जो कि इतनी मजबूत और बहुरंगी है कि इसको पूर्णतः मिटाना असंभव है। इसी कारण सांस्कृतिक धरोहर, स्थापत्य, शिल्प और कारीगरों में सांस्कृतिक एवं पारम्परि वैभव के उत्कृष्ट नमूने आज भी संस्कृति के संवाहक रूप से दिखाई पड़ते हैं।

कला–साहित्य–संगीत सर्वमान्य रूप से हमारे समय के गवाह हैं, इसलिए उनमें बदलाव भी अनिवार्य रूप से आता हैं। समय–समय पर कलायें परिधान एवं सामाजिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय प्रयोजनों में भी माध्यम बनी हैं। परन्तु जब से वे स्वतंत्र अभिव्यक्ति के रूप में अस्तित्व में आयी हैं, उनमें उल्लेखनीय विकास हुआ है, जड़ता समाप्त हुई है। वे लीक को तोड़ती हुयी अपनी पूर्ण क्षमता के साथ बाहर आयी हैं। समकालीन कला के विविध रूपों ने कला परिदृश्य को बदला है। आज कला में विभिन्न प्रयोग हो रहे हैं, विभिन्न कला सामग्री और विचार कला में आकार ले रहे हैं और उनमें विविध कला–रूपों का विकास भी हो रहा है। दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों से लेकर परम्परागत सामग्रियों तक कलाकर्म का हिस्सा बन रहीं है और तभी जनमानस का इनसे सीधा जुड़ाव भी हो पा रहा है। यदि हम आधुनिक परिधानों की बात करें तो यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक परिधान पाश्चात्य संस्कृतिक की छाप लेकर भारतीय परिधानों में समावेशित हो गये हैं। भारतीय संस्कृति की जड़े इतनी मजबूत हैं कि उन्हें पूर्णतः बदलना असम्भव है, हाँ कुछ बदलाव के साथ परिधानों या अन्य कलाओं में समावेशित अवश्य किया जा सकता है।

कला और संस्कृति की बात करें तो भारत दुनिया के प्रमुख सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देशों में से एक है और यह इस देश का सौभाग्य रहा है कि समृद्ध संस्कृति और शासकों के सौन्दर्य बोध तथा कला संरक्षण के कारण आज विविध संस्कृतियाँ एवं कलाओं का धनी है।

# बढ़ती रफ्तार, थमती ज़िदंगी

**सुश्री दीक्षा यादव**
**लेखापाल**

भारतीय सड़कों पर लगातार बरती जा रही असावधानियों के चलते सड़क दुर्घटनाएं बढ़ रही है। भारत में सड़क दुर्घटनाएं एक नई ऊंचाई पर पहुंच गई हैं,

विश्व बैंक के वर्ष 2019 के आँकड़ों के अनुसार, भारत सड़क दुर्घटना परिदृश्य, हर दिन 415 मौतों कई घायलों के साथ, कोविड–19 से भी अधिक गंभीर है।

कारण

बुनियादी ढाँचे की कमी : सड़कों और वाहनों की दयनीय स्थिति, खराब दृश्यता, खराब सड़क डिज़ायन और इंजीनियरिंग सामग्री तथा निर्माण की गुणवत्ता में कमी, विशेष रूप से तीव्र मोड़ के साथ सिंगल–लेन।

लापरवाही और जोखिम : ओवर स्पीडिंग, शराब या ड्रग्स के प्रभाव में ड्राइविंग, थकान या बिना हेलमेट के सवारी, सीटबेल्ट के बिना ड्राइविंग आदि।

ध्यान भंग : ड्राइविंग के दौरान मोबाइल फोन पर बात करना सड़क दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण बन गया है।

ओलरलोडिंग : परिवहन लागत की बचत करने के लिए ।

भारत में कमजोर वाहन सुरक्षा मानकः वर्ष 2014 में ग्लोबल न्यू कार असेसमेंट प्रोग्राम (NCAP) द्वारा किये गये क्रैश टेस्ट से पता चला है कि भारत के कुछ सबसे अधिक बिकने वाले कार मॉडल संयुक्त राष्ट्र (UN) के फ्रंटल इम्पैक्ट क्रैश टेस्ट में विफल रहे है।

जागरूकता की कमी : एयरबैग, एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम आदि जैसी सुरक्षा सुविधाओं के महत्व के बारे में जागरूकता की कमी है।

**प्रभाव :**

आर्थिक : विश्व बैंक के अनुसार, सड़क दुर्घटनाओं से भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रत्येक वर्ष सकल घरेलू उत्पाद का 3 से 5 प्रतिशत नुकसान होता है।

**सामाजिक :**

परिवारों पर बोझ :

सड़क दुर्घटना के कारण होने वाली मृत्यु की वजह से गरीब परिवारों की लगभग सात माह की घरेलू आय कर कम हो जाती है,

दुर्घटनाओं की संख्या को न्यूनतम स्तर पर लाने के उपाय–

– सड़क दुर्घटना से बचाव के उपाय रोड को देखकर पार करें।
– अपनी कार और बाइक के दोनों तरफ मिरर जरूर लगाएं।
– गाड़ी चलाते समय मोबाईल का इस्तेमाल ना करें।
– हेलमेट जरूर पहनना चाहिए।
– शराब पीकर गाड़ी ना चलाएं।
– फुटपाथ पर ही चलना चाहिए यह अधिक सुरक्षित होता है।
– अपनी गति सीमा को नियंत्रित रखें।
– सीटबेल्ट लगाना काफी अधिक जरूरी है।
– भारी वाहनों के लोड को सीमित करें।
– मोड़ और चौराहों पर धीमे चलें।
– फाटक रहित रेलवे लाइन को देखकर पार करें।
– स्पीड ब्रेकर पर धीरे चलना चाहिए।
– दुर्घटना के बाद मदद जरूरी या वीडियों सोशल मीडिया खत्म कर रहा लोगों की संवेदनाएं

''एक उम्मीद सडक पर
छटपटाती रही ...
भीड़ थी बस
वीडियों बनाती रही ...''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इसे प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना के तौर पर देखा जाता है यूॅ मनुष्य का अकेले में कोई अस्तित्व नहीं है। संवेदनाएं हमें एक दूसरे से जोड़े रखती है। किसी भी व्यक्ति का दुख देखकर अकस्मात हमारा दुखी हो जाना संवेदनाओं के कारण ही होता है। पर आजकल अधिकांश लोग संवेदनशून्य होते जा रहे हैं। पहले दो लोग लड़ते थे तो तीसरा समझाने और बचाने आता था।

अब दो लोग लड़ते हैं तो तीसरा वीडियों बनाने पहुंच जाता है। पहले सड़क पर अगर कोई दुर्घटना होती थी तो आसपास के लोग दुर्घटनाग्रस्त यात्रियों को बचाने पहुंच जाते थे। आजकल सिथित बदल गई है आजकल बचाने के बजाय लोग वीडियों बनाना शुरू कर देते है।

''हादसे से

बड़ा हादसा ये हुआ ...

लोग ठहरे नहीं

हादसा देखकर''

ऐसी घटनाओं से हमारी संवेदना भी धीरे–धीरे मर रही है। जब ऐसा होता है तो एक मनुष्य के तौर पर हमार पतन होने लगता है, क्योंकि संवेदना के स्तर पर ही हम एक–दूसरे से जुड़ते हैं और एक–दूसरे के दुख–सुख को समझते हैं। जब वही नहीं रहेगीं, तो कैसा रिश्ता और कैसा जुडाव। जिस जिंदगी में भाव और संवेदना मूल तत्व होते थे, अब उन्हें दरकिनार किया जा रहा हैं । ऐसा करके हम अपने इंसान होने के बुनियादी मूल्य को खो रहे हैं ।

घायल की जान बचाएं, जागरूक नागरिक का फर्ज निभाएं

– तुरंत अपना वाहन रोकें,

– किसी भी व्यक्ति को लगी चोट की प्रकृति और सीमा का पता लगाना,

– यदि कोई व्यक्ति घायल हो गया है, तो तो आप जो भी सहायता करने मे सक्षम हों उसे प्रदान करें,

– यदि आप प्राथमिकता चिकित्सा के बारे में कुछ नहीं जानते हैं, तो ऐसा कुछ भी न करें जिससे चोट बढ़ सकती है।

– सहायता प्रदान करने में यह सुनिश्चित करना शामिल है कि योग्य सहायता–जैसे एम्बुलेंस या बचाव इकाई–को बुलाया जाएं

– जब तक आप मदद के लिए जाने के लिए बाध्य न हों, आपको तब तक

– घटनास्थल पर ही रहना चाहिए जब तक कि कोई पुलिस अधिकारी आपको जाने की अनुमति न दे दें।

– आपातकालीन सेवाओं को कॉल करें।

– एनएचएआई ने त्वरित आपातकालीन प्रतिक्रिया के लिए ई आरएस मोबाईल ऐप लॉन्च किया – ईआरएस ऐप का प्राथमिक उद्देश्य सड़क उपयोगकर्ताओं को सीधे एनएचएआई के कमांड और नियंत्रण केंद्र से जोड़कर दुर्घटना या चिकित्सा आपता स्थिति जैसी गंभीर स्थितियों के दौरान त्वरित और निर्बाध प्रतिक्रिया तंत्र प्रदान करना है।

आपके परिवार की सुरक्षा

आपकी सुरक्षा से जुडी हुई है,

खुद को सुरक्षित रखे।

# विलुप्त हो रहे गाँव और उनकी चीजें

**श्री सुगंध कुमार वर्मा**
**सहायक लेखा अधिकारी**

बीते हुए सालों में आधुनिकीकरण और शहरीकरण बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। इस बढ़ रहे विकास से हमारी जीवन शैली में बहुत से बदलाव हुए हैं और साथ ही हमारी जिंदगी से गाँव और उनसे जुड़ी हुई बहुत सारी चीजे आज गायब हो गयी हैं। उन्हीं में से कुछ की आज मैं चर्चा करूंगा—

शुरुआत करते है कि, गाँवों में सुबह घड़ी देखकर नहीं होती थी, लोग तारे और चांद को देखकर जागा करते थे। हमारे दादा—दादी की सुबह ऐसे होती थी कि चाँद गाँव के दूसरी छोर पर पहुँच जाता था मतलब सुबह हो गयी। आज के समय में हमारा वो समय 4 बजे का होता है। जगने के बाद शुरु होते हैं दैनिक कार्य। गाय भैंसों को चारा डालना, गोबर उठाना, घर बाहर सब जगह झाड़ू लगाना इत्यादि। औरतें जागते ही नहा—धोकर नीम के पेड़ पर जल अर्पित करती थी। फिर रसोई के कामों में लिप्त हो जाती थी। गांव के खाने में भी क्या स्वाद होता था। मजा ही आ जाता था सिल—बट्टे पर पीसे हुए मसाले से चूल्हे पर बनी आलू की सब्जी की जगह आज की किचन किंग मसाले में बनी पनीर की सब्जी भी नहीं ले सकती। आलू की सब्जी और चूल्हे पर बनी मोटी—मोटी रोटी घी लगाकर खाने के बाद आप 5 स्टार होटल का खाना भूल जाआगे।

भैंस का दूध बाल्टी में निकाला जाता था फिर आग पर गरम करके उसमें से मलाई अलग हो जाने के बाद एक अलग बर्तन में रखी जाती थी। जब मलाई एकत्रित हो जाती तब सुबह दादी लोग उसको मथनी से मथ कर मक्खन और दही बनाया करती थी। मक्खन से घी बनाते वक्त घी की खुशबू पूरे घर में फैल जाती थी। आज के समय में सब चीजें गायब सी हो गयी हैं। सिल—बट्टे की जगह मिक्सर ग्राइन्डर ने ली है तथा देशी घी की जगह अब सिर्फ ब्रांडेड घी ही मिलते है।

गाँवो में बच्चे जागते ही, घर के बाहर खेलना शुरु कर देते थे, क्योंकि उस समय ज्यादातर सरकारी स्कूल होते थे जोकि 10 बजे से शुरू होते थे। आज के समय बच्चों के ज्गाने से पहले स्कूल बस आ जाती है। गाँव के बच्चे पड़ोसियों के घर खाना खा लेते थे बिना किसी संकोच के और सौ फीसदी भरोसे के साथ पूरा दिन बिता दिया करते थे। सुबह स्कूल के लिए निकलते समय, सभी गाँव के बच्चे 3 से 4 किमी तक पैदल जाते थे और स्कूल से आते वक्त रास्ते में बेर तोड़ना, गन्ना चूसना, बैलगाड़ी मिल जाने से उस पर लटक कर चढ़ जाना आम बात हुआ करती थी। दोपहर की चिलचिलाती धूप में बिना सनस्क्रीन क्रीम के खेलते रहने पर बच्चों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ता था। गर्मियों की

छुट्टियों में सभी मौसेरे भाई–बहन के साथ नाना–नानी के घर जाते थे, बिना टी.वी. बिना मोबाइल के वो एक महीना कब बीत जाता था पता ही नहीं चलता था। आज के समय में लोग संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार में रहना पसंद करते है। तो कजिन एक साथ रह ही नहीं पाते। सभी माता–पिता एक ही बच्चा रखना चाहते है तो आने वाले समय में चाचा, मामा, ताऊ, बुआ जैसे रिश्ते ही खत्म हो जायेंगे। अब तो गर्मी की छुट्टियों में माँ बाप बच्चों का ट्यूशन लगा देते हैं. कहीं डांस क्लास, कहीं म्यूजिक क्लास आदि। ये सब भी आवश्यक हैं परन्तु बच्चों का बचपन कहीं गुम सा होने लगा है।

पब–जी और कैंडी क्रश के दौर में हम पुराने खेलों को भूल हो चुके है। छुप्पन–छुपाई, कंचे, कब्बडी ये वो खेल है जिन्हें हम बचपन में भाई–बहन और दोस्तों के साथ खेला करते थे। गर्मी की छुट्टियां हो या स्कूल का लंच ये छोटे–छोटे खेल हमारे डेली रूटीन में शामिल हुआ करते थे। घर में बैठे–बैठे हम वजीर–बादशाह, सांप सीढ़ी जैसे खेल खूब खेला करते थे। इन खेलों के लिए न किसी मँहगे गैजेट की जरुरत न किसी स्मार्ट फोन की।

छप्पर और खपरैल के घर आजकल गाँवों से बिल्कुल ही गायब हो गये हैं। अब सबके घर पक्के हो गये हैं। छप्पर के घरों में ए.सी. और कूलर की जरूरत नहीं पड़ती थी। अब न तो किसी के पास इतना समय है कि वह हर साल छप्पर के घर बनाये (क्योकि छप्पर बस एक ही साल चलता है।) और न ही कोई उनमें रहना पसंद करता है। मिट्टी के कच्चे घरों में कैरोसीन के तेल से जलती हुयी डिबिया और पास ही चारपाई पर हाथ से बने पंखे से हवा करते हुये घर के बुजुर्ग हर घर में मिल जाया करते थे लेकिन हाय आज का यह आधुनिक युग! घर में लाइट की रोशनी तो होती है लेकिन सब के दरवाज़े बंद होते है। अब घरों से वो डिबिया, वो, हाथ पंखे और लगभग बुजुर्ग भी गायब हो गये हैं।

यहाँ यह कहना गलत नहीं होगा कि कितने बदल गये हैं हमारे गाँव, उनका खानपान, उनका रहन–सहन सब कुछ बदल चुका है। आज लोग सुख सुविधाओं के इतने आदी हो गये हैं, कि बिना टी.वी, बिना इण्टरनेट, बिना फ्रिज एवं ए.सी. के जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। मिट्टी के घड़े का हम एक छोटा सा उदाहरण देख सकते है। पूरी गर्मी मिट्टी के घड़े में पानी भर कर उपयोग किया जाए तो मैं समझता हूँ कि फ्रिज के पानी की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मिट्टी के घड़े का पानी शीतल, मृदु होने के साथ–साथ काफी लम्बे समय तक खराब नहीं होता है। लेकिन फ्रिज के 'चिल्ड' पानी के आगे आज शहरी लोग घड़े की महत्ता को क्या ही समझेंगे।

एक समय था जब गाँव में सर्दियों में आग में शकरकंद, आलु, मटर, चना, भून कर खाया करते थे। उसका स्वाद अपने आप में अलग था लेकिन समय के साथ आज चूल्हे की जगह गैस ने ले ली है। पतीले की जगह प्रेशर कुकर ने ले ली। पहले जब पतीले में दाल बनाई जाती थी तो दाल से निकलने वाले झाग और गंदगी को अलग कर दिया जाता था परन्तु प्रेशर कुकर में यह सम्भव नहीं है।

यही कारण है कि आज विभिन्न प्रकार की बीमारियां बढ़ रही है। गर्मियों के मौसम में गाँवों में चने और जौ से बने सत्तु के साथ आम की चटनी एक प्रसिद्ध खाद्य हुआ करता था। बहुत सारे लोग सत्तु को घोलकर भी पीते थे. यह शरीर को ठंडक देने वाला एक उत्तम पेय पदार्थ था। सत्तु शरीर को लू से बचाने के लिए बेहद कारगार उपाय था। लेकिन आज सत्तु की जगह विभिन्न प्रकार की कोल्डड्रिंक ने ले ली है। आज हर घर में कोल्डड्रिंक मिल जायेगी। परन्तु सत्तु और छाछ का मिलना बहुत मुश्किल है।

आज स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक, पिज्जा, बर्गर, चाऊमीन, मेमोज जैसी चलन में आ गयी हैं। एक समय था जब गाँव में चना, मटर, बाजरा, मक्का, गांव के भाड़ पर भुनवा कर खाया जाता था। गाँव में बनने वाले गरम गुड़ और राब का रस जिस किसी ने इस सब का स्वाद लिया है वह इसे कभी भूल नही सकता है। चाहे वह कितना आधुनिक क्यों न हो जाए। पहले के समय में आटा हाथ से पीसा जाता था। प्रतिदिन की जरूरत के हिसाब से ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना आदि का आटा हाथ की चकिया से पीसकर तैयार किया जाता था जिसकी आज कल्पना करना भी मुमकिन नही है। कहा जाता है अगर गर्भवती महिलाएं हाथ से चलाने वाली चक्की से आटा पीसती थी तो हॉस्पिटल जाने की आवश्यकता नही पड़ती थी। जबकि आज गाँवों में इन आदतों के अभाव में हर बच्चा हॉस्पिटल में पैदा कराना पड़ रहा है। पहले घरों के चारों तरफ अमरूद, आम, इमली, बेर के पेड़ लगे हुए पाए जाते थे। इस समय में कैथ शहतूत जैसे फल तो बाजार से भी गायब हो गये। आम के बगीचे की जगह या तो लोगों ने घर बना लिये या फिर खेती के काम में प्रयोग करने लगे।

अब फलों के लिए बाजार के चक्कर लगाने पड़ते है। जिसमें शुद्धता की भी कोई गारंटी नही है। बढ़ती जनसंख्या और भौतिकवादी सुखों के चलते हम पेड़ों को काटते जा रहे। पहले जिस स्थान पर गाय और बैल बंधे होते थे, आज वह जगह पोर्च बन गयी है वहां ट्रेक्टर खड़े किये जाते है, बैल तो अब किसी भी घर में दिखाई नहीं देते है। गाँव में लोकगीत और लोक परंपराओं का भी अपना एक अलग महत्व था लेकिन आज यह बस धीरे–धीरे विलुप्त हो रहा है। आज गाँवों में मनोरंजन के अन्य साधन उपलब्ध है। जिसके चलते गाँव के स्थानीय खेल जैसे–गिल्ली डंडा, कुश्ती, कबड्डी लगभग विलुप्त हो चुके हैं। पहले बच्चे साइकिल या खराब टायर चलाकर भी मनोरंजन कर लिया करते थे। परन्तु आज के समय वीडियो गेम अधिक प्रचलित हो गया है। गाँव में जीवन अच्छा ही था। रोज शाम को एक अलग ही आनन्द आता था ठण्डी हवा में घूमना, चाँद की रोशनी में तो गाँव का नज़ारा देखते ही बनता था। गाँव के लोग अच्छे और मददगार होते थे। साथ में खेतों में काम करना, साथ में गाय–बकरी चराना यह गाँवों की आम बात थी। दोस्तों के साथ पगडंडियों पर दौड़ लगाना, गर्मियों में तालाब या नदी में छलांग लगाना, हर किसी की इस तरह की गांव से जुड़ी अनगिनत यादें होंगी, लेकिन पिछले कुछ दशक में बहुत से बदलाव आए है। एक बार फिर हमें गाँव से, उनकी यादों से, जुड़ने का वक्त आ गया है, नहीं तो कुछ ही दिनों में गाँव और उनकी चीज़े विलुप्त ही हो जाएंगी।

# अतरंगी दोस्ती

**सुश्री मिलिन्दा शिरपुरकर**
**वरिष्ठ लेखा अधिकारी**

दोस्ती कहने को तो सिर्फ वाई शब्द है पर इसकी दुनिया इतनी रहरगयी, इतनी चमत्कारी, इतनी जादुई है कि इसमें हम डूबते चले जाते है और एक दिल का रिश्ता जाता फिर ये रिश्ता हमारे रोज के जीवन का हिस्सा बन जाता है। यहीं हमेशा से मेरी अतरंगी दोस्ती, मेरे पेड़ पौधों से रही है। मेरा हरा–हरा, भीगा भीगा सा हर पौधा मुझसे हमेशा जैसे बतियानें को, अपनी खुशी बांटने को आतुर रहता है

मेरा सबसे पक्का दोस्त मेरी माँ के घर लगा मेरा गुलमोहर का पेड़ था. जिसे हम गुल्लू दादा कहते थे कितना तो उस पर हम चढ़े और कितना तो उस पर से गिरे, पर हर बार बाहें फैलाकर उसने हमको थामा। उसकी डाली पर खूब झूले यहां तक कि उसके मोटे तने से लिपटकर अपनी हर पीड़ा अपनी हर खुशी बाँटी है। और हमेशा आड़े वक्त पर उसने अपने पीछे हमें छुपाया भी है। उसके पीछे छुपकर हम एक दम निर्भीक ओर आश्वस्त होते रहे। हर छोटी बड़ी बात का साक्षी रहा है मेरा गुल्लु दादा। जब कभी बाहर जाना होना था मैं उसको बोलकर जाती थी कि गुल्लू दादा घर का, आई–बाबा का सबका ध्यान रखना । और उन्होंने मेरा ये काम हमेशा किया। मायका छूटने के बाद भी उससे मिलने की जबरदस्त बेचौनी रहती थी ।

ऐसी ही मेरी अतरंगी दोस्ती मेरे सभी पेड़ पौधों से है। मेरी पीले फूलों से लदी बेल, नीले फूलों से लदी मेरी ''अपराजिता'' अपना सिर ऊँचा कर के जैसे मेरा संवल बढ़ा रही हो कि मेरी जैसे अपराजिता बनना है तुझे मेरे लालू, पीलू, केसर, मोतिया गुलाबों नाम के गुलाब मेरी ओर रोज हँसकर देखते है और मेरा हालचाल पूछते है... मेरे लाल, पीले, केसरी, सफेद गुड़हल एकदम लदे फदे अपने ही भार से झुक झुक कर मेरा माथा चूमते है, मेरा छोटा सा गेंदू, मेरा लाड़ प्यार से बिगड़ा हुआ मोगरा, मेरी नटखट चमेली मुझे हरदम महकना सिखाती है। मेरी रजनीगंधा, मेरी चमक बढ़ाती है। और उधर देखो तो मेरे लाल–लाल टमाटर, मेरी तीखे मिर्च, मेरे हरे –बैगंनी,बैगंनी से मेरी रसोई चाहे जब चटपटा स्वाद ले आती है । और सेम की बेल तो इतनी इतराकर ऊपर चढ़ती रही है जैसे उसे आसमान छूना हो और चाहे जब अपने बैंगनी फूलों से सज जाती है। अब तो मेरी दोस्ती की दुनिया में मेरा स्थल–कमल भी जुड़ गया, इसका बड़ा सा फूल पहले शुभ्र–श्वेत रहता है फिर एकदम से गुलाबी रंगत लेने लगता है। नया–नया सा दोस्त बना है मेरा वो, और खुश भी है मेरी दोस्ती से ।

यही मेरी छोटी सी बगिया, मेरी बहुत अच्छी सहेली है जिसने मेरे जीवन की बगिया महका रखी है ..... जो मुझे सिखाती है कि हमारी तरह तू भी अपनी जड़ों से जुड़ी रहना, और कहती है कि जीवन भी ऐसा ही सुंदर, खुशबु से भरा है।

# भारतीय दर्शन– एक संक्षिप्त परिचय

**श्री गौरव आनन्द**
**लेखापाल**

सम्यग्दर्शनसंपन्नः कर्मभिर्न निबध्यते ।
दशनिन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते ।

मानव जीवन विविध प्रकार की अनिश्चित्ताओं एवं चुनौतियों से परिपूर्ण है। यद्यपि मनुष्य अन्य प्राणियों की भांति ही अपने अस्तित्व के संरक्षण एवं समृद्धि हेतु सतत संघर्षरत है, परन्तु अन्य जीव–जंतुओं के विपरीत वह अपने जीवन की विषमताओं को बौद्धिक रूप से समझने एवं तार्किक रूप से उनका समाधान करने में सक्षम है। मानव सभ्यता के आदिकाल से ही प्रबुद्ध मनुष्य स्वचेतना, संसार की व्युत्पत्ति एवं जीवन–मृत्यु के चक्र इत्यादि की अवधारणाओं की परिकल्पना एवं सिद्धांतों का प्रतिपादन करता रहा है।

भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में अनेक समानताएँ हैं, परन्तु विभिन्न प्रकार के विषयों एवं उनसे संबंधित समस्याओं के समाधान के प्रति दोनों के दृष्टिकोण में भिन्नता है। पाश्चात्य दर्शन की भांति ही भारतीय दर्शन में तत्वमीमांसा, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान और ज्ञानमीमांसा से संबद्ध विभिन्न विषयों की चर्चा की जाती है, तथापि पाश्चात्य दर्शन के विपरीत वह केवल सैद्धान्तिक एवं बौद्धिक न होकर जीवन जीने की आदर्श विधि एवं दुखों से मुक्ति प्राप्त करने का माध्यम है।

## भारतीय दर्शन का वर्गीकरण

भारतीय दर्शन के प्रादुर्भाव एवं विकास में वेदों का प्रमुख योगदान रहा है। भारतीय दर्शन को मुख्यतः दो धाराओं में वर्गीकृत किया जाता है आस्तिक एवं नास्तिक । इस संदर्भ में आस्तिक/नास्तिक का अर्थ है वेदों की सत्ता को मानने वाला/न मानने वाला। आस्तिक वर्ग में वेदान्त, मीमांसा, सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक हैं, जबकि नास्तिक वर्ग में बौद्ध, जैन एवं चार्वाक हैं।

उक्त दर्शनों का वर्गीकरण एवं संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः–

1. आस्तिक वर्गः

i. मीमांसाः मीमांसा, जिसे पूर्व मीमांसा भी कहा जाता है, का मूल ग्रन्थ मीमांसासूत्र है जिसके रचयिता महर्षि जैमिनि हैं। इस दर्शन में वैदिक यज्ञों में मंत्रों के विनियोग तथा यज्ञों की प्रक्रियाओं का वर्णन किया

गया है। इसके अनुसार वेदों से लक्षित अर्थ ही धर्म है। वेदों ने जिन कर्मों को करने के लिए कहा है, उनको करना और जिनकों करने से मना किया है, उनकों न करना 'धर्म ' है। मीमांसा अनीश्वरवादी दर्शनों में से एक है, एवं इसमें आत्मा, ब्रह्म, जगत् आदि का विवेचन नहीं है। मीमांसकों का तर्क यह है कि फल की प्राप्ति कर्म द्वारा ही होती हैं, अतः वे कहते हैं कि कर्म और उसके प्रतिपादक वचनों के अतिरिक्त ऊपर से और किसी देवता या ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है ? मीमांसा में छः प्रमाण स्वीकार किये गये हैः प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द अर्थापत्ति और अभाव।

ii. वेदान्त : 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है– 'वेदों का अंत'। इस दर्शन के मुख्य स्त्रोत उपनिषद हैं, जो वैदिक साहित्य का अंतिम भाग हैं एवं वेद ग्रंथों तथा वैदिक साहित्य का सार समझे जाते है, अतः इसे वेदान्त कहा जाता है। इस दर्शन को उतर मीमांसा के नाम से भी जाना जाता है। वेदान्त की तीन प्रमुख शाखाएँ हैः अद्वैत वेदान्त (आदि शंकराचार्य) विशिष्ट अद्वैत (रामानुजाचार्य) और द्वैत (माधवाचार्य) | आदि शंकराचार्य ब्रह्म को प्रधान मानकर जीव और जगत् को उससे अभिन्न मानते हैं। उनके अनुसार ब्रह्म–जीव–जगत् में अभेद का ज्ञान उत्पन्न होने पर जगत् जीव में तथा जीव ब्रह्म में लीन हो जाता है। रामानुजाचार्य के अनुसार यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रह्म से भिन्न हैं फिर भी वे ब्रह्म से ही उद्भुत हैं। मोक्ष की प्राप्ति होने पर भी जीव की स्वतंत्र सत्ता रहती है। माघवाचार्य के मतानुसार जगत् और जीव ईश्वर से पृथक् हैं किंतु ईश्वर द्वारा नियंत्रित हैं। सगुण ईश्वर जगत् का सृष्टा, पालक और संहारक है।

iii. सांख्यः इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल हैं। सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है जिसमें दो स्वतंत्र तत्व स्वीकार किये गये हैं पुरुष (आत्मा) और प्रकृति। प्रथम तत्व पुरुष चेतन है एवं शरीर, इन्द्रियों, मन, बुद्धि आदि से भिन्न है। द्वितीय तत्त्व प्रकृति अचेतन है एवं इस सृष्टि का मूल कारण है। सांख्य योग में 'कैवल्य' अर्थात् मुक्ति को जीवन का परम लक्ष्य माना गया है। सांख्य दर्शन प्रकृति के विकासवाद के मूल में सत्कार्यवाद के सिद्धान्त को मानता है जिसके अनुसार सम्पूर्ण सुष्टि अपने उद्‌भव के पूर्व प्रकृति में ही अवयक्त रूप में अवस्थित था। सृष्टि परिवर्तनशील एवं नश्वर है, अतः शाश्वत एवं अपरिवर्तनशील ईश्वर सृष्टि का रचयिता नहीं हो सकता। सांख्य दर्शन में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है, एवं सृष्टि के निर्माण के लिये प्रकृति को ही पर्याप्त माना गया है।

iv- योगः इस दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। इस दर्शन का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को वह मार्ग दिखाना है जिस पर चलकर वह जीवन के परम लक्ष्य अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति कर सके। योग दर्शन सांख्य की तरह द्वैतवादी है। इसमें सांख्य दर्शन द्वारा प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा को आधार बनाया गया है। दोनों में प्रमुख भिन्नता यह है कि योग दर्शन में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया गया है। अतः योग दर्शन को 'सेश्वर सांख्य' (स+ईश्वर सांख्य) तथा सांख्य दर्शन को 'निरीश्वर सांख्य' कहा जाता है। योगदर्शन में

पुरूष तत्व केन्द्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत हुआ है। यद्यपि पुरूष और प्रकृति दोनों की स्वतंत्र सत्ता मानी गयी है परन्तु तात्विक रूप से पुरूष की सत्ता ही सर्वोच्च है।

v- <u>न्यायः</u> इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं। महर्षि वात्सयायन के शब्दों में – प्रमाणैर्थपरीक्षणं न्यायः, अर्थात् प्रमाणों द्वारा अर्थ (सिद्धान्त) का परीक्षण ही न्याय है। इस दर्शन में चार प्रकार के प्रमाणों का मान्यता दी गई है– प्रत्यक्ष (ज्ञानेन्द्रियों एवं बाह्य वस्तुओं के संयोग से प्राप्त ज्ञान), अनुमान (प्रत्यक्ष एवं तर्क पर आधारित ज्ञान), उपमान (किसी जानी हुई वस्तु के सादृश्य द्वारा दूसरी वस्तु का ज्ञान ) एवं शब्द (अप्राप्त / सर्वज्ञ पुरूष के उपदेश) न्याय दर्शन के अनुसार परमात्मा सृष्टिकर्ता, निराकार एवं सर्वव्यापक है। आत्मा एक द्रव्य है एवं सुख–दुख, राग द्वेष, इच्छा प्रयत्न, ज्ञान धर्म–अधर्म आदि इसके गुण हैं। आत्मा शरीर, इंद्रियों एवं मन से भिन्न है परन्तु अज्ञान के कारण वह इनसे अपने को अभिन्न समझती है यह बंधन है, जिसके कारण मनुष्य दुखों के अधीन रहता है। शरीर और इंद्रियों के बंधन से आत्मा का मुक्त होना ही मोक्ष है।

vi- <u>वैशेषिकः</u> महर्षि कणाद (उलूक) रचित यह दर्शन "औलूक्य ", "काणाद", या "पाशुपत" दर्शन के नामों से प्रसिद्ध है। उनके अनुसार भौतिक जगत की उत्पत्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्य कण परमाणुओं के संघनन से होती है। वैशेषिक का अर्थ है– "विशेषं पदार्थमधिकृत्य कृतं शास्त्र वैशेषिकम्" अर्थात 'विशेष' नामक पदार्थ को मूल मानकर प्रवृत्त होने के कारण इस शास्त्र का नाम वैशेषिक है। इसमें प्रत्यक्ष और अनुमान दो ही प्रमाण माने गये हैं। न्याय दर्शन की तरह वैशेषिक दर्शन भी, लौकिक दृष्टि से ही विश्व के 'वास्तविक' तत्वों पर विचार करता है। इस दर्शन में द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य विशेष और समवाय इन छः पदार्थो के साधर्म्य तथा वैधर्म्य के तत्वाधान से मोक्ष प्राप्ति मानी जाती है

साधर्म्य तथा वैधर्म्य ज्ञान की एक विशेष पद्धत्ति है, जिसके माध्यम से भ्रांतियों का निराकरण किया जाता है। ईश्वर एवं मोक्ष के विषय में न्याय एवं वैशेषिक मतों में पूर्णतः साम्यता है।

2. नास्तिक वर्ग :

i. <u>बौद्धः</u> इस दर्शन के प्रवर्तक सिद्धार्थ गौतम (गौतम बुद्ध) हैं। बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्यसत्य इस प्रकार हैंरू दुःखसमुदायनिरोधमार्गाश्चत्वार आर्यबुद्धस्याभिमतानि तत्वानि, अर्थात् 1. संसार दुःखमय है, 2. दुःख उत्पन्न होने का कारण है, 3. दुःख का निवारण संभव है, 4. दुःख निवारक मार्ग। दुःख के निवारण में आष्टांगिकमार्ग अर्थात् सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाणी, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति तथा सम्यक् समाधि का विशेष महत्व है। इसके अतिरिक्त पंचशील (अहिंसा, अस्तेय, सत्यभाषण, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह) तथा द्वादश आयतन (पंच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच कर्मेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि),

जिनसे सम्यक् कर्म करना चाहिए – भी आचार की दृष्टि से महनीय हैं। बौद्धमत के तीन मूल सिद्धांत हैं अनीश्वरवाद, अनात्मवाद एवं क्षणिकवाद, तथापि कर्म, निर्वाण, मोक्ष एवं पुनर्जन्म मान्य हैं।

ii. जैनः जैन दर्शन 24 तीर्थंकरों के उपदेशों पर आधारित है, जिनमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव एवं अंतिम तीर्थंकर वर्धमान (महावीर) हैं। प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द प्रमाण की सत्ता स्वीकार्य है। सिद्धांत की दृष्टि से जैन दर्शन एक ओर आध्यात्मवादी तथा दूसरी ओर भौतिकवादी है, क्योंकि इसमें आत्मा तथा पुद्गल (भौतिक तत्व) दोनों को माना जाता है। आत्मा प्रकाश के समान व्यापक एवं विस्तारशील है तथा मन एवं इंद्रियों के माध्यम के बिना परोक्ष विषयों के ज्ञान में समर्थ है। पूर्ण ज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं, जो निर्वाण की अवस्था में प्राप्त होता है एवं इसमें आत्मा का अनंत ज्ञान और अनंत आनंद प्रकाशित होता है। जैन दर्शन परमात्मा को कर्ता–धर्ता नहीं मानता जिसने जैसे शुभाशुभ कर्म किये हैं, उसे उसका फल अवश्यक ही मिलेगा।

iii. चार्वाक : यह एक विशुद्ध भौतिकतावादी दर्शन है, जिसके अनुसार केवल प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है एवं प्रत्यक्ष पर आश्रित भौतिक जगत् ही सत्य है। अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण स्वीकार्य नहीं हैं। केवल पंच इन्द्रियों के माध्यम से विश्वासयोग्य ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इन्द्रियातीत विषयों –ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, स्वर्ग आदि का कोई अस्तितत्व नही है। भौतिक तत्वों–वायु,जल, अग्नि एवं पृथ्वी के आकस्मिक संयोग से संसार एवं चेतना का निर्माण हुआ। शरीर की मृत्यु ही जीवन का अंत है एवं किसी प्राणी का पुनर्जन्म नहीं होता । जीवनकाल में अधिकाधिक इन्द्रिय सुख की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य है। चार्वाक दर्शन में वैदिक कर्मकाण्डों का तिरस्कार एवं खण्डन किया गया है।

आध्यात्मिकता भारतीय दर्शन का प्राण है एवं धर्म अथवा आचरण शुद्धि इसका व्यावहारिक स्वरूप है, जो व्यक्ति को सदाचरण हेतु प्रेरित करता है। भारतीय दर्शन कर्म को महत्व देता है। मनुष्य अपने कर्मो के आधार पर ही सुख–दुःख का अनुभव करता है। सत्कर्म वही है जो सामाजिक, नैतिक व मानवीय दृष्टिकोण से लाभप्रद हो।

# कभी किसी को छोटा समझकर उपहास ना करें

**श्री राजेश रजक**
**सहायक पर्यवेक्षक**

दरअसल बात उस समय की है जब भगवान श्री राम माता जानकी को दुष्ट रावण के जाल से मुक्त कराने लंका प्रस्थान कर रहे थे। रास्ते में उन्हें विशाल महासागर को पार करने का संकट सामने आया। अतः उस महासागर पर सेतु बाँधने का कार्य चालू किया गया।

प्रभू श्री राम के इस पावन कार्य में वानर, भालू एवं अन्य जीव जन्तु भी सहयोगी बन रहे थे। जिनमें एक छोटी सी गिलहरी भी शामिल थी।

जब वो छोटी सी गिलहरी अपने कठिन परिश्रम से वानरों द्वारा खूब उपहास ये कहकर उड़ाया गया कि इतनी सी रेत से विशाल सेतु के निर्माण में क्या होगा। तब प्रभु श्री राम ने उन्हें रोका और कहा कि गिलहरी के कार्य का उपहास ना बनावें, यह भी आप सभी की तरह सेतु निर्माण में बहुत उपयोगी कार्य कर रही है। आप लोग जो पत्थर बिछा रहे है। उनकी बीच में ये रेत उनको जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करेगी।

पत्थर डालने का कार्य परिश्रम का है और रेत डालने का कार्य धैर्य का है। इसी प्रकार जीवन में मेहनत और धैर्य के साथ किसी भी कार्य को आसानी से सफलतापूर्वक पूर्ण किया जा सकता है।

ऐसा कहा जाता है कि प्रभु श्री राम ने उस गिलहरी के इस कार्य से प्रसन्न होकर उसकी पीठ पर प्रेम पूर्वक अपने हाथों का फेरा था तभी से गिलहरी की पीठ पर प्रभु श्री राम के उंगलियों के निशान है।

# प्रतिस्पर्धा : एक व्यंग्य

**श्रीकान्त सिंह**
**कनिष्ठ अनुवादक**

मनुष्य अब आधुनिक हो चला है। रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार से इतर अब समाज में सोशल होना भी इसके जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। पहले यह मात्र एक ''सामाजिक'' प्राणी था, जो समाज में पारस्परिक रूप से अपना जीवन यापन करते हुए चैन की बंशी सी बजाया करता था। परन्तु फिर अचानक ''सोशल'' होने का ख्याल आया, और इस ख्याल से प्रतिस्पर्धा शब्द फूट पड़ा। अब सिर्फ जीवन–यापन से भला काम बनता ?

''सोशल'' अगर किन्हीं जनाब का नाम होता तो उनका तकियाकलाम ''जो दिखेगा, वहीं बिकेगा'' होता. और यहां दिखने का आशय केवल अच्छा– दिखने, तक सीमित नहीं है। प्रतिस्पर्धाओं की बयार से धुत मनुष्य को अब भीड़ से ''अलग'' दिखना है। इस मशक्कत में अब हदें, बेहद हो जाएंगी। किसी का भ्रम टूटेगा तो वहीं कई खुशफहमी के शिकार भी होंगे। इसी प्रतिस्पर्धा और खुशफहमी की कड़ी में एक किस्सा याद आता है।

रामगढ़ के पंबनपुर गांव में, चंदूलाल नाम का एक सेठ रहता था। वह अपनी कृपणता के लिए पूरे गांव में मशहूर था। चंदूलाल को भी यह खुशफहमी थी कि उससे ज्यादा मितव्ययी दुनिया में कोई नहीं हो सकता। वह अक्सर गांव वालों के सामने अपने इस गुण की शेखी बघारता था। कुछ महीनों बाद उसे कहीं से खबर मिली कि पंबनपुर से पांच मील दूर किशनपुर गांव में कोई मनोहरलाल नाम का व्यापारी रहता है जो उससे भी ज्यादा कंजूस है। मनोहरलाल की कंजूसी के किस्से कई गांवों तक मशहूर हो गए। लोग उसे देखने, उससे मिलने के लिए दूर–दूर से आते थे। मनोहरलाल की इतनी चर्चा सुनकर चंदूलाल की छाती पर साँप लोटने लगा। एक दिन, उसने किशनपुर जाकर मनोहरलाल से मिलने का मन बनाया। वह प्रातःकाल उठा, स्नान करने के पश्चात, पूजा करने के लिए बैठ गया। घंटी बजाई, पास रखी थैली से धूप निकालकर जलाया, श्लोक पढ़े और धूप को बुझाकर वापस थैली में रख दिया। भगवान को नमन कर उठ खड़ा हुआ और जोर से आवाज लगाई '' अजी सुनती हो ! मैं आज किशनुपर जा रहा हूं ..... संध्या तक वापस आ जाऊंगा। मैं भी तो देखूं कि उस मनोहरलाल में भला कौन से सुरखाब के पर लगे हैं, जो मुझे भूलकर उसका इतना नाम जपते फिर रहे है।

भीतर से आवाज आई'' अरे पहली बार मिलने जा रहे हैं. कुछ तोहफा तो लेकर जाइए।

यह सुनते हीं चंदूलाल के चेहरे पर मुस्कान आ गई। बड़े ताव के साथ उसने कहा ''बात तो बिल्कुल ठीक कही तुमने भाग्यवान, लाओ... एक कागज, पेंसिल और कुछ रंग लेकर आओ।''

चंदूलाल की पत्नी ने कागज, पेंसिल और रंग लाकर उसे दे दिया। चंदूलाल ने कागज पर दो खूबसूरत खरगोश के चित्र बनाए, उस चित्र में रंग भर कर कागज को एक टोकरी में रख लिया। वह टोकरी लेकर किशनपुर की ओर चल दिया। मध्याहन तक कड़ी धूप में सफर करते हुए चंदूलाल किशनपुर पहुंच गया। वहां उसने गांव वालों से मनोहरलाल के घर का पता पूछा, और फटाफट, बताई हुई राह पर चलते हुए मनोहरलाल के घर पहुंच गया। कुछ देर तक दरवाजे पर दस्तक देने के बाद एक बच्चे ने दरवाजा खोला और चंदूलाल को बड़े आश्चर्य से देखते हुए बोला ''कहिए श्रीमान! कैसे आना हुआ .... क्या आप भी मेरे पिताजी से जीवन जीने की कला सीखने आए हैं ?'' एक सात साल के बच्चे के मुंह से यह बात सुनकर चंदूलाल को बड़ी हैरानी हुई। मगर बिना कुछ जाहिर किए उसने ''हां'' में सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए डलिया में से रंगीन खरगोश का चित्र निकालकर उस बच्चे को थमा दिया। बच्चे ने चित्र लिया और वापस घर के अंदर चला गया। चंदूलाल को बहुत जोर की प्यास लगी थी, उसने सोचा की बच्चा वापस आए तो उससे पानी लाने को कहूंगा। कुछ देर बाद बच्चा पुनः घर से बाहर आया, और इससे पहले कि चंदूलाल कुछ बोलता, उसने कहा '' पिताजी तो काम से बाहर गए हैं, आने में रात हो जाएगी.... मगर आप इतनी दूर से आए हैं, इसलिए जाते हुए हमारी तरफ से भी एक भेट स्वीकार करें।

यह कहकर उसने हवा में अपनी उंगली से दो आम के आकार बनाए, और बड़े ध्यान से उस हवाई आकार को टोकरी में रख दिया। यह देखकर चंदूलाल का मुँह खुला का खुला रह गया, और घर का दरवाजा फिर से बंद हो गया है। इधर चंदूलाल घर पहुंचा और अपनी पत्नी को सारा किस्सा सुनाते हुए बोला '' मैने कम से कम कागज और रंग तो खर्च किया, उसके बालक ने तो इतना भी जरूरी न समझा... और जिसका नन्हा पुत्र ऐसा हो, उसका पिता कोई मामूली कंजूस कदापि नहीं हो सकता। ''

उधर रात को जब मनोहरलाल घर पहुंचा तो उसके बेटे ने उसे बताया कि एक श्रीमान आपसे मिलने आए थे। यह कहकर उसने खरगोश का खुबसूरत चित्र अपने पिता को दिखाया और कहा कि '' मैंने भी उन्हें खाली हाथ वापस नहीं जाने दिया, भेंट में उन्हें दो आम हवा में बनाकर दे दिए।

यह सुनकर मनोहरलाल के चेहरे पर से हवाइयां उड गई। उसने तुरंत पूछा हवा में आम ? कैसे ? यह सुनकर उसके बच्चे ने बड़ी खुशी से हवा में उगली से वैसे ही दो आम की आकृति बनाकर दिखाई। यह देखते ही मनोहलाल आग बबूला हो गया। यह अपने बच्चे के कान जोर से खींचते हुए बोला '' मैं जब भी घर से बाहर जाता हूं, तू कोई बड़ी गड़बड़ जरूर कर देता है .... आखिर क्या जरूरत थी इतना बड़ा आम बनाकर देने की ?????

तो इस तरह जनाब चंदूलाल कंजूसी की प्रतिस्पर्धा में मनोहरलाल से मात खा गए, और उनकी सबसे–बड़ा कंजूस होने की खुशफहमी भी दूर हो गई।

ऐसी अद्‌भुत प्रतिस्पर्धाएं दैनंदिन भी देखने को मिल ही जाती हैं। हाल ही में, छुट्टियों में अपने घर गया था। सर्दियों की सुबह में दादा–दादी की नोक झोंक सुनकर नींद खुली। अंदेशा इस बात का था कि जरूर दादा जी ने आज फिर से दादी को '' कबरी बिलार (बिल्ली)'' बुलाया होगा। दरअसल मुँह में दांत नहीं होने की वजह से दादी अक्सर गरमागरम चाय तस्तरी में उडेल कर सपड़–सपड़ की आवाज के साथ झटपट पी जाया करती थीं। मगर आज मुद्दा तो कुछ और ही था। दादा और दादी आज ब्लड प्रेशर नपवाकर आए थे। दादी बोली ''हे देखा। हमसे ढेर मूंहजोरी जिन करा.... हमार प्रेसर बहुत ज्यादा है।'' हमार प्रेसर बहुत ज्यादा है। ''इस पर दादाजी ने तपाक से जवाब दिया ''अरे चुप रहा .... तोहार प्रेसर कौनों प्रेसर या? तोहसे ढेर प्रेसर तौ हमार रहन पिछली बार। ''

बहरहाल, भले ही ऐसी तमाम अतरंगी प्रतिस्पर्धाएं सुनने में अजीब लगे, भले ही उनमें से अलग और अव्वल दिखने की ललक रिस रही हो और भले ही कई बार और बार–बार हदें बेहद हुई हों, लेकिन प्रतिस्पर्धा ने मुनष्यों को किसी न किसी रूप में आज भी आपस में जोड़े ही रखा है। इस प्रतिस्पर्धा में मग्न मनुष्य चौंकड़ियां भरता हुआ गाता फिरता है।

# एक अविस्मणीय–घटना

**सुश्री रंजना गजभिये**
**सेवा निवृत्त सहायक लेखा अधिकारी**

बात उन दिनों की है जब मैं और मेरे तीन भाई–बहन हम चारों स्कूल में पढ़ते थे। हम चारों भाई–बहनों की उम्र में तीन–तीन साल का अंतर है। हम चारों घर के अंदर कमरे में ही बैट–बाल (क्रिकेट) खेल रहे थे। थोड़ी ही दूरी पर मम्मी लेटी हुई थीं। उस दिन मम्मी खाना बनाकर चूल्हा चौका करके थकी हारी जमीन पर ही लेट गई थीं। मेरी बैटिंग करने की बारी आई मैंने जैसे ही बॉल खेलने के लिए बैट उठाया तो बैट मेरे हाँथों से छूटकर मम्मी के चेहरे पर जा लगा और मम्मी के चेहरे से खून के फव्वारे छुटने लगे। जेसे किसी प्लास्टिक के पाइप में छेद हो जाने पर पानी की बारीक–बारीक फव्वारे निकलने लगते हैं। वैसे ही मेरी मम्मी के चेहरे पर तीन चार जगह से खून के फव्वारे निकल रहे थे, जिसे देखकर हम चारों भाई बहन जोर जोर से रोने लगे। मैं दौड़ती हुई पड़ोस में गई और पड़ोस में रहने वाले अंकल को रोते हुए यह सब बताया। वो अंकल आए, उन्होंने जब मम्मी को इस हाल में देखा तो, वो भी घबरा गए। आनन–फानन में मम्मी को सबसे करीबी सरकारी अस्पताल में ले गये जहाँ उनका इलाज कराया गया। उस समय फोन मोबाइल उपलब्ध नहीं थे कि पापा को बता दें। अस्पताल भी घर के पास नहीं होते थे। मम्मी का खून काफी बह गया था। अस्पताल जाते–जाते, मम्मी बेहोश हो गई थीं। शाम को जब पापा घर आये तो मम्मी की हालत देखकर स्तब्ध हो गये कि ये कैसे हो गया ? मुझे काटो तो खून नहीं था। मैं डर के मारे थर–थर काँप रही थी। अब पापा से डांट/मार पड़ेगी । मम्मी की हालत देखकर मैं बहुत दुखी थी। अब मैं 60 वर्ष की होने वाली हूँ। इतने सालों के बाद भी उस दिन के दर्द का आज भी होता है। मैं सिहर उठती हूँ। साथ ही बचपन में की गई उस गलती का मुझे आज भी अफसोस है कि काश! वो बैट मेरे हाथ से छूटकर मम्मी को नहीं लगा होता। काश! मैंने वो गलती नहीं की होती। मेरी वजह से मम्मी को इतनी तकलीफ सहन करनी पड़ी थी।

# रक्षा औद्योगिक गलियारा एवं भारत

**श्री रजनीश कुमार**
**सहायक लेखा अधिकारी**

दिल्ली में जी 20 की बैठक में भारत को जिन क्षेत्रों में बड़ी सफलता मिली, उनमें रक्षा उत्पादन क्षेत्र भी शामिल है। खासकर फ्रांस और जापान ने भारत के साथ रक्षा से जुड़े उत्पादन पर जल्दी एक रोडमैप तैयार करने का प्रस्ताव रखा। प्रधानमंत्री नरेंन्द्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रो ने भारत में उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों के उत्पादन का विस्तार करने का फैसला किया, जिसमें इंडो–पैसिफिक क्षेत्र और उससे आगे अन्य देशों को भी शामिल किया जाएगा। जापान के प्रधानमंत्री ने भी इससे सहमति जताई।

डिफेन्स टेक्नोलॉजी और प्लेटफार्म के डिजाइन, विकास, परीक्षण के लिये औद्योगिक रोडमैप को शीघ्र अंतिम रूप देने पर जोर दिया गया । चीन का इंडो–पैसेफिक में दबदबा नहीं रहे इसलिये यूरोपीय देश भारत को मुख्य भागीदार बनाना चाहते है। भारत ने भी अब रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये कमर कस ली है। पिछले दिनों रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ऐलान किया कि रक्षा औद्योगिक गलियारे (डिफेंस कॉरिडोर) में नट–बोल्ट से लेकर ब्रहमोस मिसाइल तक का निर्माण होगा।

भारत दुनिया के उन पांच बड़े देशों में शामिल है जो अपनी रक्षा पर सबसे अधिक खर्च करते है। अब देश रक्षा उत्पादन में तेजी से विश्व में अपनी जगह मजबूत करता जा रहा है। मोदी सरकार इस समय दो डिफेन्स कॉरिडोर को विकसित करने में लगी हुई है। एक उत्तर प्रदेश और दूसरा तमिलनाडू में।

सरकार का उद्देश्य भारतीय एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्र में विदेशी निर्भरता को कम करना है। साथ ही दूसरे देशों को रक्षा सामान एक्सपोर्ट करना है। मेक इन इंडिया का असर यह है कि हमारा रक्षा निर्यात वर्ष 2022–23 में लगभग 16,000 करोड़ रूपये तक पहुंच गया है। मोदी सरकार का डिफेन्स कॉरिडोर स्थापित करने का फैसला अब फल देने लगा है।

डिफेन्स कॉरिडोर भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। ये डिफेन्स क्षेत्र से जुडा प्रोजेक्ट है। दरअसल डिफेंस कॉरिडोर एक रूट होता है, जिसमें कई शहर शामिल होते है। इन शहरों में सेना के काम आने वाले सामानों के निर्माण के लिये इंडस्ट्री–उद्योग विकसित किये जाते है। जिसमें कई प्राइवेट व सरकारी कंपनियाँ हिस्सा लेती है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनो रक्षा उत्पादन में भाग ले रहे है, विशेषकर मध्यम और लघु उद्योगों की इकाइयां डिफेन्स कॉरिडोर्स में ज्यादा लाभ की स्थिति में होगी।

रक्षा सामानों के उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दशा में डिफेंस कॉरिडोर का खासा महत्व है। वर्तमान परिदृश्य में भारत रक्षा क्षेत्र की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिये ज्यादातर विदेशों पर निर्भर है।

भारत अपनी जरूरतों के अधिकांश हथियार दूसरे देशों से आयात करता है। इसलिये इस डिफेंस कॉरिडोर की अहमियत बहुत खास है। अंतरराष्ट्रीय स्तर के रक्षा उत्पादों और हथियारों का उत्पादन होने के साथ ही इन डिफेंस कॉरिडोर के कारण ही क्षेत्रीय उद्योगों का विकास होगा। साथ ही नये रोजगारों का मौका बनेगा। ये उद्योग ग्लोबल सप्लाई चेन के साथ भी जुड़ सकेगें।

देश में दो डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर बनाए जा रहे है। इनमें से पहला तमिलनाडु के पाँच शहरों चेन्नई, होसूर, कोयंबटूर, सलेम और तिरूचिरापल्ली में और दूसरा उत्तर प्रदेश रक्षा औद्योगिक गलियारा बनाया जाना है। हाल ही में प्रधानमंत्री ने प्रस्तावित उत्तर प्रदेश रक्षा औद्योगिक गलियारे के अलीगढ़ नोड के प्रदर्शनी मॉडल का अवलोकन किया। इसकी घोषणा प्रधानमंत्री ने वर्ष 2018 में लखनऊ में यूपी इन्वेस्टर्स समिट के उदघाटन के दौरान की थी। उत्तर प्रदेश रक्षा औघोगिक गलियारा एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य भारतीय एक्सप्रेस और रक्षा क्षेत्र की विदेशी निर्भरता को कम करना है। इसमें 6 नोड्स होगें– अलीगढ़, कानपुर, चित्रकूट, झांसी और लखनऊ। उत्तर प्रदेश एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण को राज्य की विभिन्न एजेंसियों के साथ मिलकर इस परियोजना को निष्पादित करने के लिये नोडल एजेंसी बनाया गया था। इस कॉरिडोर/गलियारों का उद्देश्य राज्य को सबसे बड़े और उन्नत रक्षा विनिर्माण केन्द्रों में से एक रूप में स्थापित किया है। निवेश मित्र के माध्यम से रक्षा और अन्य निर्माण इकाईयों को सिंगल विंडो अनुमोदन और मंजूरी देना। राज्य में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को सरल बनाने के लिये उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निवेश मित्र पोर्टल शुरू किया गया है। रोजगार स्थितियों को आसान या लचीला बनाने के उद्देश्य से रक्षा और एयरोस्पेस उद्योग कि लिये लेबर परमिट प्रोत्साहन और सब्सिडी की आसान प्रतिपूर्ति के साथ–साथ सरल प्रक्रियाएं और युक्तिसंगत नियामक व्यवस्था सुनिश्चित जल आपूर्ति और निर्बाध बिजली 4–लेन हैवी–ड्यूटी हाईवे के साथ कनेक्टिविटी भी प्रदान की जा सकेगी।

रक्षा गलियारा एक मार्ग या पथ को संदर्भित करता है जिसका उपयोग सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र और एमएसएमई द्वारा रक्षा उपकरणों के घरेलू उत्पादन के साथ–साथ रक्षा बलों हेतु उपकरण/परिचालन क्षमता को बढ़ाने के लिये किया जाता है। इससे रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने और मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी, जिससे हमारा आयात कम होगा और अन्य देशों के लिये इन वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। यह प्रौद्योगिकियों के सहक्रियात्मक विकास के माध्यम से रक्षा विनिर्माण पारिथितिकी तंत्र को प्रोत्साहन प्रदान करेगा, एमएसएमई और स्टार्ट–अप सहित निजी घरेलू निर्माताओं के विकास को बढ़ावा देगा।

इसके माध्यम से रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के विकास में पहली चुनौती उन्नत इलेक्ट्रोनिक्स सामग्री की है, जो सभी कार्यक्षेत्रो में ऊध्वार्थर कटौती को प्रदर्शित करती है। सामग्री का उपयोग किया जाता है। उद्योग की अपेक्षाओं को पूरा करना, जो न केवल ठिकानों को स्थापित करने या स्थानांतरित करने के लिये अपने प्रस्तावों की तेजी से मंजूरी चाहते है, बल्कि विशेष आर्थिक क्षेत्रो को कर लाभ, तीव्र निर्णयन आदि कोई अन्य कर लाभ भी सरकार के लिये एक चुनौती है। सार्वजनिक क्षेत्र में ऑडर्स की अधिकता या संकेद्रण है शायद ही किसी आर्डर को वास्तव में प्राइवेट प्लेयर्स के लिये संरक्षित किया जाता है।

इसकी सफलता उद्योगों की समस्याओं का समाधान करने, निवेश आकर्षित करने रोजगार सृजन, समकालीन तकनीकों का निर्माण, विनिर्माण क्षेत्र में विकास में सहायता करने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने में 'मेक इन इंडिया' की सफलता में निहित है। डिफेंस कॉरिडोर में बुलेट प्रूफ जैकेट, ड्रोन, लड़ाकू विमान, हेलीकॉप्टर, तोप और उसके गोले, क्रूज मिसाइल, विभिन्न तरह की बंदूके आदि बनाये जायेगें। बीते महीने ही रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि लखनऊ में ब्रह्मोस मिसाइल भी बनेगा। साथ ही लड़ाकू विमान, तोप, टैंक, पनडुब्बी, युद्धपोत, हेलीकॉप्टर, सैनिकों के लिये बूट, बुलेट प्रूफ जैकेट, पैराशूट, ग्लब्स आदि के उत्पादन से जुड़ी इकाईयां इन कॉरिडोर से स्थापित होंगी। अगस्त 2020 में रक्षा मंत्रालय ने 101 रक्षा सामानों की लिस्ट बनाई थी। जिसके तहत 2020 से 2024 तक जिनका आयात बंद हो जाएगा। इसके बारे में रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने भी कहा था कि अब भारत इन सामानों के उत्पादन में  सक्षम हो सके, इसका सुनहरा अवसर है। यूपी डिफेंस कॉरिडोर में निवेश के लिये 100 से ज्यादा कंपनियाँ 50 हजार करोड़ से ज्यादा निवेश करेंगी। इन कंपनियों में अडाणी सिस्टम एंड टेक्नोलोजी जेनसर एयरोस्पेस, अनंत टेक्नोलोजी, एंडयोर एयरोस्टिम्स प्रमुख है। अडाणी डिफेंस सिस्टम द्वारा शॉर्ट रेंज मिसाइलें और गोला–बारूद, जेनसर एयरोस्पेस द्वारा लाइट ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट (राजस रक्षण), अनंत टेक्नोलोजी द्वारा लोअर अर्थ ऑर्बिट और जिओसिंक्रोनस सेटेलाइट्स, आधुनिक मैटेरियल द्वारा डिफेंस टेक्सटाइल्स, डॉटम एडवांस्ट कंपोजिट्स द्वारा कार्बन फिल्टर, ग्लास फाइबर आदि एवं डेल्टा कॉम्बेट सिस्टम्स द्वारा हथियार और गोला–बारूद का निर्माण किया जाएगा।

तटीय राज्य होने की वजह से तमिलनाडू डिफेंस कॉरिडोर की खास भूमिका रहेगी। यहाँ चार मुख्य समुद्री पोर्ट और 22 छोटे समुद्री पोर्ट्स है। साथ ही चार इंटरनेशनल 2 डोमेस्टिक एयरपोर्ट है। इसलिए इसका रणनीतिक महत्व बहुत रहेगा। जनवरी, 2019 में इस कॉरिडोर का उद्घाटन हुआ था। यहां आवश्यक परीक्षण, सर्टिफिकेशन फैसेलिटी, निर्यात सुविधा केन्द्र, टेक्नोलोजी ट्रांसफर्स का काम होगा।

फ्रांस की कंपनी एमबीडीए और भारत की एल एंड टी कोयंबटूर में मिसाइल वैपन सिस्टम का निर्माण करेंगी। बीएचईएल रानीपेट में 200 करोड़ के निवेश में एयरों स्पेस बना रहा है। इसके अलावा कुलाशेखरापट्टनम में इसरो ने 1000 करोड़ के निवेश से कार्यक्रम लॉन्च स्टेशन बनाने की योजना पर काम किया है। इससे भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नई गति मिलेगी। कोयंबटूर में एलएमडब्ल्यू और बोंइग ने स्किल सेंटर स्थापित करने का फैसला किया है। जो एयरोस्पेस और डिफेंस इंडस्ट्री को जरूरी मानव संसाधन की आपूर्ति करेगा।

भारत में 2025 तक 130 बिलियन अमेरीकी डॉलर का खर्च कर रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। इसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी महत्वपूर्ण होगी। निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा। विदेशी उपकरण निर्माता, भारतीय कंपनियों के साथ रणनीतिक साझेदारी कर रही है। योजना के अनुसार 2025 तक भारत का लक्ष्य 1.75 लाख करोड़ रूपये के रक्षा उत्पादन करने का है। हजार करोड़ रूपये का निर्यात लक्ष्य भी तय किया गया है। इससे उत्तर प्रदेश राज्य एवं तमिलनाडू का सर्वागींण विकास होगा, बहुआयामी रोजगार के अवसर विकसित होंगे तथा रक्षा उत्पादों के क्षेत्र में देश आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होते हुये इस रक्षा उत्पादों का निर्यात भी कर सकेगा।

# लाईब्रेरी की व्यथा

**श्री लोकेश पाल**
**वरिष्ठ लेखापाल**

न्यायालय में एक रोचक केस आया। कोर्ट में ये अपने तरीके का एक अनोखा मामला था। जज साहब ने पहले तो ध्यानपूर्वक इस अनोखे मामले को पढ़ा, फिर मुस्कराते हुए वकील साहब की ओर देखा। मामला कुछ यूँ था कि लाइब्रेरी ने कोर्ट में अर्जी दी थी कि उसके यहाँ किताबें आत्महत्या कर रही हैं और लाइब्रेरी का कहना था कि उसके पीछे ''मोबाइल'' और ''कंप्यूटर'' का हाथ है।

मामला संवेदनशील था, तो जज साहब ने लाइब्रेरी से पूछा '' अरे! महाशय कोई आधार भी है इस आरोप का या यूँ ही आरोप लगा रहे हो''। लाइब्रेरी ने कहा हुजूर '' क्यूँ नहीं है, आधार । बिल्कुल है। सब सबूत है हमारे पास'' ।

वकील साहब ने कहा –'' आजकल लोग मोबाइल और कंप्यूटर में इतने व्यस्त है कि लाइब्रेरी और किताबों का उनके जीवन में अब कोई महत्व ही नहीं रह गया है। अब कोई पाठक लाइब्रेरी में देखने को नहीं मिलता। एक अंधेरे कोने में गुमनाम अकेले पड़े–पड़े इनकी दुर्दशा हो रही है, हुजूर इनके लिए कुछ कीजियें।

लाइब्रेरी ने आगे कहा '' कंप्यूटर ने तो गजब की हेरा–फेरी की है हमारे साथ । इसके पास जितना भी ज्ञान और जानकारी है सब हमसे ही लिया हुआ है, इसके पास खुद का कुछ भी नहीं है। हमसे ज्ञान और जानकारी ले कर आज ये हमें ही आँखें दिखाते है, हमें ही खत्म करने पर आमादा है। कुछ करिये साहब, हमें बचाइये। ''

जब साहब ने कहा '' आपकी, ये लाइबेरी है कहाँ पर और कब से है'' तो वकील साहब ने बताया कि '' शहर के बाहर नदी किनारे बनी है जी, लाइब्रेरी । ''

जज साहब ने कहा ''पहले कितने लोग आते थे और किताबों की क्या स्थिति थी किताबों का रख–रखाव और व्यवहार कैसा था। ''

लाइब्रेरी ने कहा '' साहब पहले तो सब बहुत ही अच्छा चल रहा था, किताबें एकदम खुश रहा करती थी, उनका तो गाँव से लेकर शहर तक नाम था, शहर के बड़े–बड़े लोगों के साथ उठना–बैठना था।

अनेक ज्ञानी लोग नतमस्तक थे उनके आगे, और व्यवहार के बारे में तो क्या कहें हम, अपनी किताबें के बारे में ..........

प्रकृति के जेसी रचना,

गंगाजल के समान शीतलता,

माँ जैसा प्यार

पिता के समान जिम्मेदारी,

लक्ष्मण समान भाई जैसा साथ,

बड़ी बहन के समान दुलार,

छोटी बहन जैसी नटखट शरारतें,

हिमालय सी मजबूत,

अनंत आकाश सी विशालता,

गुलाब की पंखुड़ी समान कोमलता,

मिश्री के जैसी मिठास.......... । ''

लाइब्रेरी ने आगे गर्व से कहा '' क्या नही है हमारी किताबों के पास ....

मीरा सी भक्ति,

राम सी मर्यादा,

अंजनीपुत्र सा बल

नारद मुनि सा ज्ञान,

राजा हरिश्चंद्र सी सच्चाई

रानी पद्मानी सा आत्म–सम्मान,

ग्रहों सी चाल,

चंद्रमा सी चंचलता,

सूर्य सा ताप,

क्या नही है हमारी किताबों में । ''

लाइब्रेरी ने आगे कहा–'' जब भी कभी कोई समस्या आती थी तो लोग किताबों से उपाय जानने आते थे, चर्चा करते थे, ज्ञान बाटते थे।

लाइब्रेरी ने आगे कहा '' क्या नही है हमारी किताबों के पास ........................

हमारी किताबों में जादू था,

विज्ञान था,

इतिहास था,

भविष्य था,

अणु से लेकर अथाह अनंत ब्रह्मांड था,

क्या नहीं था हमारे पास ..................... ।

हमारे पास किस्से–कहानियाँ था,

काव्य रचना थी,

सुर थे,

सार थे,

संदेश थे,

सब कुछ तो था।

आज भी हमारे पास.....................

इंसानियत,

इनायत,

इबादत,

रौशनी,

फरिश्तों के सफर

शहरों से लेकर गाँव,

विशाल पहाड़

नक्शे,

रास्ते, पानी, हवा,

नदी से लेकर किनारा,

भंवर, ये झरने, ये झीले

ये धरती,

ये मौसम, ये सर्दी,

ये गर्मी, ये बारिश,

ये पतझड़

धूप, झील,

नदी, समंदर,

ये चटकते हुए आसमान में, चकमते सितारे,

ये मिट्‌टी, ये रेत, ये फूल,

ये पंछी,

ये उड़ती हुई तितलियां

.......................... सब कुछ है।

किन्तु अब सब बदल गया है, कोई भी अब नही किताबों की सुध लेने को तैयार नही है।''

जज साहब ने लाइब्रेरी से कहा '' आपका पक्ष तो सुन लिया, अब '' मोबाइल'' और ''कंप्यूटर'' का भी पक्ष सुना जाएगा। जज साहब ने ''मोबाइल '' और ''कंप्यूटर'' को अपना पक्ष कोर्ट में दाखिल करने के लिए आदेश दिया।

जल्द ही ''मोबाइल '' और ''कंप्यूटर'' अपना पक्ष कोर्ट में दाखिल करेंगे...............................।

आगे समय की इजा़जत हुई और आप जैसे पाठकों का साथ मिला तो पत्रिका के आगामी अंक में ''मोबाइल '' और ''कंप्यूटर'' द्वारा कोर्ट में पेशी होने संबंधी जानकारी एवं संवाद, पाठकों के लिए प्रकाशित किया जाएगा।

# साहस और दृढ़ता- जीवन का महत्वपूर्ण गुण

**श्री कमलेश चांदवानी**
**सहायक लेखा अधिकारी**

हमारे जीवन में सफलता या कोई विशेष एवं असाधारण उपलब्धि केवल ज्ञान या कौशल से ही हासिल नहीं की जा सकती, बल्कि साहस और दृढ़ता के माध्यम से भी हासिल की जा सकती है। साहस और दृढ़ता किसी व्यक्ति के ऐसे गुण है जो जीवन में मार्गदर्शन देते है एवं हमें कठिन समय में भी चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करते है।

हमारे जीवन में कई प्रकार के डर होते है उनमें से मुख्य है: असफलता का डर। कई बार ऐसा विचार कि ज्ञान या कौशल के बिना हमें सफलता नहीं मिल सकती एवं निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। हमें सफलता की ओर अपना पहला कदम लेने से रोकता है ऐसे समय में साहस और दृढ़ता हमें आगे बढने की शक्ति प्रदान करती है।

नेल्सन मंडेला ने एक बार कहा था *"मैंने सीखा कि साहस डर की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि उस पर विजय है। बहादुर आदमी वह नहीं है जिसे डर नहीं लगता, बल्कि वह है जो डर पर विजय पा लेता है।"*

आज मैं साहस एवं दृढ़ता के विषय में अपना निजी अनुभाग साझा कर रहा हूं । दिनांक 08 अक्टूबर 2023 को आयरन-मैन नामक एक अंतराष्ट्रीय ट्राईथलॉन रेस भारत के गोवा राज्य में आयोजित की गई थी जिसमें लगभग 50 देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया था। आयरन-मैन ट्राईथलॉन रेस में प्रतिभागी को 1.9 किलोमीटर समुद्र में तैराकी, 90 किलोमीटर साइकिलिंग एवं 21 किलोमीटर रनिंग, एक के बाद लगातार निर्धारित समय 08 घंटे एवं 30 मिनिट में करनी होती है। मैंने भी उक्त रेस में भाग लिया एवं तीनों गतिविधियों समुद्र में तैराकी, साइकिलिंग एवं रनिंग निर्धारित समय में पूरा कर आयरन मैन का खिताब हासिल किया।

लेकिन कहा जाता है ना कि मंजिल से कई गुना महत्वपूर्ण उसकी ओर की जाने वाली यात्रा है, जो कि हमें काफी कुछ सिखाती है एवं बेहतर इंसान बनाती है। वैसे ही मेरी आयरन मैन रेस की तैयारी एवं प्रशिक्षण की यात्रा अधिक महत्वपूर्ण है। जो कि साहस और दृढ़ता का उदाहरण है।

मेरी इस यात्रा की नींव सोशल मीडिया पर देखा गया एक विडियो था, जिसे देखकर ही मेरे मन में स्वयं के लिये भी आयरन मैन का खिताब हासिल करने का विचार का बीज रोपित हुआ था। चूंकि मैं स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से रनिंग एवं साइकिलिंग काफी समय से करता आ रहा हूं, किन्तु इस रेस में तीनों गतिविधियां एक साथ करनी थी। अत: इसके लिए मुझे विशेष रूप से शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार होना था। रनिंग एवं साइकिलिंग के लिये तो आश्वस्त था लेकिन तैराकी मेरे लिये एक चुनौती थी। और वो भी समुद्र में जहां अरब सागर की तेज लहरें किसी प्रवीण तैराक को भी डरा सकती है, उसके साथ ही खुला समुद्र, जहां दिशाओं का अंदाजा लगाना भी काफी मुश्किल होता है। मेरे जैसे व्यक्ति जिसे जलांतक (हाइड्रोफोबिया) हो उसके लिये असंभव सा प्रतीत हो रहा था, पर मैंने सभी चुनौतियों से ज्यादा अपने लक्ष्य पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। जिसके लिये मैनें साहस जुटाया एवं अपनी तैयारी प्रारंभ कर दी।



जैसा कि हम जानते है कि साहस एवं दृढ़ता से किसी भी डर की चुनौती पर विजय हासिल की जा सकती है एवं आवश्यक ज्ञान एवं कौशल भी प्राप्त किया जा सकता है। अत: माह मार्च 2023 से मैनें रनिंग एवं साइकिलिंग का अभ्यास श्री प्रवीण सपकाल जो कि आयरन मैन प्रमाणिक प्रशिक्षक है, के मार्गदर्शन में प्रारंभ किया। साथ ही तैराकी का प्रशिक्षण लेना भी प्रांरभ किया, जिसकी शुरूआत मैनें मात्र 4 फीट गहरे स्विमिगं पूल में प्रारंभिक स्तर से की। जिसमें मुझे अपने प्रशिक्षण श्री एजाज़ अहमद का पूर्ण प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अत: समय के साथ ही मैनें प्रारंभिक स्तर की तैराकी स्विमिंग पूल में करना प्रारंभ कर दिया परन्तु अगली चुनौती राह में प्रतीक्षा कर रही थी, जो थी खुले पानी में तैरना। जिसमें सही दिशा में तैरना बहुत महत्वपूर्ण है अन्यथा पानी में गलत दिशा में भटकने की पूर्ण संभावना बनी रहती है, जो आपका समय और ऊर्जा दोनो ही बर्बाद कर सकती है। साथ ही पानी में डूबने का भी डर बना रहता है। किन्तु जैसा कि कहा गया है कि बहादुर आदमी वह नहीं है, जिसे डर नहीं लगता, बल्कि वह है जो डर पर विजय पा लेता है। अत: मैने भोपाल के खूबसूरत झील "बडे तालाब" में प्रशिक्षण एवं अभ्यास से इस चुनौती पर भी विजय प्राप्त कर ली। और सहज रूप से तालाब में 02 से 03 किलोमीटर एवं उससे भी ज्यादा दूरी तक तैरना प्रारंभ कर दिया। अब समय था असली चुनौती यानि कि समुद्र में तैराकी का । हमारी आयरन मैन रेस 08 अक्टूबर 2023 को थी किन्तु मैं, अपने रेस स्थल, पणजी गोवा 03 अक्टूबर को ही पहुंच गया। अपनी पूरी सामग्री के साथ जिसमें मेरी साइकिल, जर्सी एवं रनिंग एवं स्विमिंग हेतु आवश्यक सामान एवं पोषण हेतु सामग्री मुख्य थी। अपनी पत्नि, 05 वर्षीय पुत्र एवं स्विमिंग कोच साहब के साथ अगली सुबह मैं पणजी के मिरामार समुद्र तट पर अभ्यास हेतु पहुंच गया। प्रथम दृष्टि में तो अरब सागर में दृढ़ निश्चय और साहस की कोई कमी नहीं

थी, तो बस उतर गया समुद्र में अपने कोच साहब के साथ। शुरूआत में लहरों ने काफी परेशान किया, साथ ही जैली मछली के डंक का भी डर था, परन्तु अपनी तकनीक में आवश्यक संशोधन कर मैनें समुद्र में भी तैरना प्रारंभ कर दिया। साथ में, गोवा के पणजी में रनिंग और साइकिलिंग का भी अभ्यास चलता रहा। इसी के साथ आ गया 08 अक्टूबर, हमारी रेस का दिन।

रेस प्रात: 07 बजे प्रारंभ होनी थी किन्तु हमें रेस स्थल मिरामार समुद्र तट पर आवश्यक औपचारिकताओं हेतु प्रात: 05 बजे उपस्थित होना था। हमारी रेस तैराकी से प्रारंभ हुई और मैंने लगभग 54 मिनिट में लगभग 02 किलोमीटर तैराकी पूरी कर ली, जिसके लिए कट ऑफ समय 70 मिनिट था। उसके बाद करनी थी साइकिलिंग, जो थी लगभग 100 किलोमीटर, मैंने अगले 04 घंटों में पूर्ण कर ली। अब अंतिम गतिविधि यानि कि 21 किलोमीटर दौड़ शेष थी, जो दिन के लगभग 12:15 पर प्रारंभ हुई। साथ आ गई थी नई चुनौती जो थी गोवा कि चिलचिलाती गर्मी और उमस और साथ थी पहले की गतिविधियों, तैराकी और साइकिलिंग की थकान । वो उमस भी ऐसी कि दौड़ के दौरान हमें लगभग हर 500 मीटर पर अपने सिर पर बर्फ के पानी की बाल्टी डालनी पड़ रही थी ताकि शरीर का तापमान अधिक ना बढे। किन्तु ये मेरे साहस को डगमगा नहीं पाया। और धीमी शुरूआत के बावजूद मैने रेस को समय के भीतर ही पूरा कर लिया।

समापन रेखा (फिनिशिंग लाइन) के दूसरी ओर मेरी पत्नि, जो मेरी सम्पूर्ण आयरन मैन यात्रा, मार्च 2023 से रेस पूर्ण होने तक साथ रही, मेरा 05 साल का पुत्र जो मुझे देख काफी उत्साहित था, मेरे कोच साहब और मित्रगण मेरा स्वागत करने की प्रतीक्षा में थे। जैसे ही आयरन मैन का मैडल मुझे पहनाया गया, मेरी आंखों में आंसू थे। साथ ही था विश्वास कि अगर साहस और दृढ़ता हो तो कुछ भी असंभव नहीं और सब कुछ जीता जा सकता है। अत: यह कथन सत्य है **कि कभी हार ना मानने की आदत ही , एक दिन आपकी जीत का कारण बनती है।**

# सीरत

**श्री गिरीश कुमार सुनकर**
**कनिष्ठ अनुवादक**

कितनी खूबसूरत लगती हैं वो लड़कियाँ।

जो लगाती हैं बिन्दी आस की,

ओढ़ती हैं चुन्नी जिम्मेदारियों की,

जिनके हाथों में होती है स्याही, सफलताओं की ।

जो रखती हैं विश्वास, खूबसूरती पर नहीं

खूबसीरत होने पर ।

जो जीती हैं सपनों को, बेखौफ होकर

जो किसी के जीवन में अंधेरे की

खिड़कियां खोलकर भर देती हैं रौशनियाँ।

कितनी खूबसूरत होती हैं वो लड़कियां,

कितनी खूबसूरत लगती हैं वो लड़कियां ।

# यादें

**श्री मधुकर सिंह**
**सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी**

कभी साथ चलते–चलते मैं रास्ता ही भूल गया....
कभी साथ चलते–चलते चलने वाले को भूल गया.....

मुझे यकीन था तुम्हे भुला दूंगा पर तुम याद रही....
हैरानी इस बात से है तू मुझे कैसे भूल गया......

मुझे मेरे ऊर्ज तक लाने वाले मुझे याद नहीं.....
जैसे कोई राजा गद्दी पर बैठा और प्रजा भूल गया.....

माफ करना एक शेर था जहन में तुम्हे सुनाना था.....
बाकी गजल तो याद है मैं बस वो शेर भूल गया....

एक बात जो याद रखनी थी वो याद ना रही.......
एक बात जो भूलनी थी उसे भूलना भूल गया.....।

# संघर्ष ही जीवन है

**कुमारी साक्षी**
**डी.ई.ओ.**

संघर्ष ही जीवन है।

लोहा जितना तपता है, उतनी ही ताकत भरता है

सोने को जितनी आग लगे, वो उतना प्रखर निखरता है।

हीरे पर जितनी धार लगे, वो उतना खूब चमकता है।

मिट्टी का बर्तन पकता है, तब धुन पर खूब खनकता है।

सूरज जैसा बनना है, तो सूरज जितना जलना होगा।

नदियों सा आदर पाना है, तो पर्वत छोड़ निकलना होगा।

और हम आदम के बेटे हैं, तो क्यों सोंचे राह सरल होगी।

कुछ ज्यादा वक्त लगेगा, पर संघर्ष जरूर सफल होगा।

चलो थक कर ना बैठें हम, अभी तो सफर बाकी है,

हर मोड़ पे इक दीप जले, अभी वो शहर बाकी है।

छांव की चाह करें क्यों, जब धूप ही राह दिखाती है,

अंधेरों से लड़ना होगा, तभी तो सुबह मुस्कुराती है।

हर पत्थर खुद बोलेगा, इक दिन मेरा आकार देख,

तू मत रुकना मेहनत में, बस खुद पे ऐतबार देख।

बूंद–बूंद से भरता सागर, हर प्रयास की कीमत है,

संघर्ष की इस गाथा में, छिपी जीवन की श्रद्धा है।

# ख्वाहिशें

**श्री सचिन कुमार भारतीय**
**लेखापाल**

मैं और मेरी ख्वाहिशें दबी थी अब तक,
थमी थी अब तक, डरी थी अब तक,
जख्म मिले थे हजार, रूह सिसकती थी बार बार।
सांसे बेधड़क थी हर बार,
आँखे नम थी, होठ बेलब्ज़ थे,
और दौड़ती इस दुनिया में हमारे पर कटे थे।
ख्वाहिशें खफ़ा थी तब से, जख्म बेआवाज़ थे जब से,
ख्वाहिशें मेरी आसमान की नमी थी, सुबह नहीं शाम से वो जगी थी।
और फिर किसी कागज़ के पन्नों की हसीं थी।
मिली आज फिर से वो ख्वाहिशें उन्हीं पन्नों में
बदल गये हैं लोग, बदल गया है ये वक्त,
पर उन ख्वाहिशों की खुशबू वहीं है।
बिखेरनी है ये खुशबू हर सांस के साथ,
थमेंगे नहीं, उड़ेंगे उन ख्वाहिशों के पास ।।

# प्रेम–पथ

**श्री संजय कुमार सिह**
**वरिष्ठ अनुवादक**

तुम्हें किस बात का गम है, तुमने घराना सजा रखा है,
राख से मेरी मोहब्बत के आलीशान शामियाना सजा रखा है।
हो गया हूँ मैं अकेला तुम्हारे जाने के बाद कुछ इस कदर
तुम्हारे अधूरे खतों से मैंने खुद का वीराना सजा रखा है।
उगते सूरज की इबादत की दुनिया है कुछ ऐसी दीवानी,
मेरे दोस्तों ने तुम्हारी तारीफ में मिजाज शायराना सजा रखा है।
अब दिन रात में सजदे करता हूँ सातवें आसमान के खुदा की
बुतपरस्ती में यूँ डूबा हूँ मैं तेवर खुद का काफिराना सजा रखा है।
अब इंतजार में बैठा हूँ मैं उस मुस्तकबिल की महबूबा के दीदार को
खुद को पहले से तराश कर मैंने अपने पाक दिल का नजराना सजा रखा हैं ।
रात का दामन पकडे तेरा यह दीवाना चला जाता है
अब तू तरस जाएगी देखने को मोहल्ले में मेरा चेहरा
खुद को पहले से बेहतर दिखाने का तेरा बहाना चला जाता है
जानता हूँ कि तू हँसती है मेरे बीते दिनों का हवाला देकर
तू खुश रहे सदा रकीब की बाहों में, यह बेगाना चला जाता है
तालीम हासिल हुई थी मुझे दुनिया की खुदा के फजल से
लेकिन आशिकी नाकाम रही, इश्क से अंजाना चला जाता है।
दोस्तों ने भी साथ छोड़ा देख मेरे गुरबत के दिनों का आना

फरिश्ते पुकारते हैं कि इस दुनिया से हमारा आशियाना चला जाता है
आशिकी के अलावा हमने खुलकर की थी खुदा की इबादत
आज लेकिन मेरे जिस्म में मजहबी सुकुन का तराना चला जाता है।
यह मेरे रूबरू आज कौन मुस्कुराए जा रहा है।
मुझे तो लंबे अरसे से कोई गम खाए जा रहा है।
संभाला है मैंने अपने जज्बातों को वैसे तो बहुत लेकिन
फिर भी आँखों से ना जाने कौन आँसू बहाए जा रहा है।
खाई थी हमने कसम कि फिर आशिकी ना करेंगे
हमारे हर लम्हा कोई आशिकी निभाए जा रहा है।
सोचता हूँ मैं अब वह शौहर के घर महफूज होंगे
उनकी गमगीन तस्वीर देख दिल सताए जा रहा है।
सुना है अपने दोस्तों से उन्होंने किया था ज़िक्र हमारा
यही ज़िक्र अब नासुर बनकर हमें सताए जा रहा है।
गुजरता हूँ उनकी गलियों से दिल की धड़कनों को तेज किये
शायद मौत का कोई फरिश्ता मुझे नजदीक बुलाए जा रहा है।
आशिकी नाकाम रही और जिंदगी में भी हम नाकाम रहे
फिर भी खुदा जमाने की नजर में हमें अव्वल बनाए जा रहा है।

# माँ कैसी होती है?

**श्री सुगन्ध कुमार वर्मा**
**सहायक लेखा अधिकारी**

माँ कैसी होती है ?
कोई बताये ये माँ कैसी होती है?

गर्मी में छांव सी
सर्दी में धूप सी
या फिर शायद जो बरसात में अपने अंचल में हमें
बचाने वाली ऐसी होती है माँ
कैसी होती है माँ

दिन मं चांद की शीतलता सी
रात में सूरज की रोशनी सी
या फिर शायद शाम के उस दरवाजे के दीपक सी
होती है माँ
कैसी होती है माँ

होली के रंग सी
दिवाली के पटाखों सी
या फिर शायद ईद की मीठी सेवाइयों सी होती है माँ
कैसी होती है माँ

दुःख में जो मुस्कराना सिखा दे, वैसी
हमारी खुशियों में खुद आंसू बहा दे वैसी
या फिर शायद सब कुछ सही होने पर जिंदगी में
चार चांद लगा दे, जैसी होती है माँ

## कैसी होती है माँ

सरदर्द में क्रोसीन सी
बुखार में पैरासिटा–मॉल सी
या फिर शायद जो हर बीमारी में काम उस रामबाण सी होती है माँ
कैसी होती है माँ ?

द्वापर की देवकी, या फिर यशोदा
त्रेता की कैकयी, या फिर कौशल्या
या फिर शायद एक ही माँ के अनेक रूप होती है माँ
कैसी होती है माँ ?

कैसी होती है माँ
कोई बताये कैसी होती है माँ
मेरी माँ तू ही बता न कैसी होती है माँ

# माँ

**श्री सजल पटेल**
**लेखापाल**

गॉव की वो अंधेरा चीरती रातें,
बिजली कड़कती थी, मैं डर जाता था।
मॉ सीने पे हाथ रख देती थी और मैं पलभर मैं सो जाता था।

जब भी मैं रोता हूँ, माँ मुझे सीने से लगा लेती है।
मेरी हर तकलीफ को वो अपना बना लेती है।

परीक्षा मेरी होती है, माँ उपवास रखती है।
भगवान को याद करती है, दुआ में मेरी बात रखती है।
जो माँ तुम्हारे साथ है, तो हर मंजिल तुम्हारी है।

ये दौलत, ये शोहरत, ये मकां, ये दुकां, तुम्ही रख लो, मुझे कुछ नहीं चाहिए।
मुझे हर सुख–दुख को बांटने, मेरे पास मुझे माँ चाहिए।

# भोज का न्योता

**श्री सोहन कुमार**
**कनिष्ठ अनुवादक**

एक बार मेरे पास एक भोज का न्योता आया।
न्योता देखकर मैं मन ही मन खूब हर्षाया।
रात को भोज पर जाना है और ।
छोले, पूरी, नान, पनीर दबाकर खाना है।
कपड़ों पर इस्त्री करवाकर बढ़िया शेव बनाकर।
हम ठाट–बाट से भोज स्थल पर पहुंच ही गए।
देखकर भोज स्थल, पेट हमारा और खाली हो गया।
और चल रहे थे जिस ढंग से वो ढंग भी पूरी तरह बदल गया।
जैसे ही हमने अन्दर प्रवेश किया ।
हमने अपरा होश–हवास गवां दिया।
हमने तो सोचा था बुफे सिस्टम और ।
इन्होने तो पत्तल सिस्टम करवा दिया।
जैसे ही हमने एक–एक कर पकवानों पर डाली नजर।
लेकिन शायद कहीं पनीर हो गया इधर–उधर।
कोई बात नहीं कहकर, अपने मन को समझाते हुए।
और पनीर–पूरी को ध्यान में लाते हुए।
हमने सोचा कोई बात नहीं, छोले पूरी से ही काम चला लेगें।
खूब दबाकर खाएंगे और घर भी बॉधकर ले जाएंगे।
अब आगे देखा तो अभी भी समस्या बहुत बड़ी थी ।
पत्तल सिस्टम के लिए भी लम्बी कतार लगी थी।
हम भी अपने बैठने का इंतजार करते हुए कतार में लग गए।
आगे कौन, पीछे कौन, के चक्कर में बीच में ही फंस गए ।
धीरे–धीरे कतार में भीड़ बढ़ती गई और ।
हमारा पसीना भी सिर से चेहरे तक आने लगा।
जो कपड़े पहने थे उसका सत्यानाश हो गया।
और तन–मन पसीने से तर–तर कर पूरी तरह भीग गया।

तभी पीछे से कुछ लड़कियों की हंसी सुनाई दी।

फिर से तन–मन तंदुरस्त व ऊर्जावान हो गया।

फिर बड़ी देर के बाद भोजन के लिए नंबर आया।

और बड़ी ही बेसब्री के साथ मैंने अपना रूमाल बिछाया।

सबसे पहले पत्तल के साथ गिलास, कटोरी और चम्मच गया परोसा।

और मन में अब भी पनीर का ही था पूरा भरोसा।

पूरी आई, आलू की सब्जी आई, छोले व रायता आया।

खीर आई पर पनीर न आया।

पंथ निहार–निहार मन पूरी तरह पथराया।

मैंने एक से पूछा, क्यों भाई पनीर नहीं बनाया ।

वह झुंझलाते हुऐ मुझ पर चिल्लाया।

कहा, पनीर तो था पर सबसे पहले मैं यहां पर आया।

और मुझे भी पनीर का दर्शन नहीं मिल पाया ।

क्योंकि बारातियों ने पनीर को खूब दबाकर खाया।

इसलिए जो मैं और तुम चाहते थे, भर पेट खाना।

वो बिल्कुल भी बच नहीं पाया, क्या अब भी है, कुछ पचाना।

अब मैंने मन मारकर खाना शुरू किया।

लेकिन सामने बैठी लड़कियों ने मुझे निहारना शुरू किया।

भूख तो बहुत तेज लग रही थी और मैं धीरे–धीरे दो–दो पूरी ले रहा था।

और अन्दर ही अन्दर सामने बैठी लड़कियों को कोस रहा था।।

शरमाते हुए मैं अच्छी तरह खा भी नही पा रहा था।

और परोसने वालों को भी नहीं बुला पा रहा था।

और अगल–बगल के सभी लोग खाकर जा रह थे।

और परोसने वाले भी मेरे पास नहीं आ रहे थे।।

कोई भोजन परोसने के लिए मेरी आवाज भी नहीं सुन रहा था।

इसलिए मुझे पानी पी–पी कर बेसब्री से इंतजार करना पड़ रहा था।।

और दुर्भायपूर्ण क्या होगा कि तभी चार–छः लड़कियां मेरे सिर पर खड़ी हो गई।

और भोजन का इंतजार करते–करते पत्तल भी खाली पड़ी रह गई।।

अभी भी उठने का मन तो नहीं कर रहा था।

क्योंकि अब भी भूख की आग पेट में लग रही थी।।

भोजन घर ले जाने की बात तो छोड़ो, आधा पेट भरकर हमें वापस आना पड़ा।

बुफे सिस्टम को सोचकर पत्तल वाला भोज ही आधा पेट खाना पड़ा।।

# अव्याप्त

**श्री लोकेश पाल**
**वरिष्ठ लेखापाल**

सच को सच, झूठ को झूठ कहता हूँ,
बस यही बुरी लत, लगा बैठा हूँ।
इश्क जब सर पर चढ़े तो कुछ यूं हो जाता है,
रात तो रात, वो तो दिन में भी दिए जलाना है।
बेरहमी से क्यों ना मारे तुझको '' होमी '',
कमबख्त इश्क करता है वो भी इस जमाने में।
पीटेंगे पीटने वाले,
तो पीटने दो,
हमें जुनून है इश्क का,
हम इश्क करेंगे।
बिछड़कर तुझसे कुछ यूँ हो गया,
दर्द हद से गुजरा और दवा हो गया।
जो कहा, वो कर गुज़रना है ''होमी ''
सही गलत का फैसला, अब उसको करना है।
बहाना कुछ बनाकर वो छोड़ देगा ''होमी ''
दास्ताँ इश्क की ये आम है ज़माने में।
खरीदना उसके बस की बात नहीं ''होमी ''
वह बोली चढ़ाएगा और मैदान छोड़ देगा।
नीलामी में घर बेच दिया उसने,
गज़ब कयामत की हिमाकत है।
बनाएगा, बिगड़ेगा, फिर बनाएगा,
बस यही सच्चाई बाकी रह गयी ज़माने में।

# विश्वगुरू भारत

**श्री अमन कुमार**
**सहायक लेखा अधिकारी**

सभी देशों में देश एक महान है,
भारत जिसका नाम है।
सदियों से विश्व को–
धर्म ज्ञान और मानवता का ज्ञान दिया।
जहाँ दूध की नदियाँ बहती थी,
डाल–डाल पर सोने की चिड़ियाँ रहती थी।
जहाँ जात–पात का भेद नहीं,
कोई लिंग–धर्म का भेद नही।
ये देवों की जन्मस्थली रही – राम, कृष्ण, बुद्ध ने अवतार लिया,
मेरा देश महान है, भारत जिसका नाम है।
जब–जब देश पर आया संकट,
किसी महापुरूष ने अवतार लिया,
पर बीच में कुछ दुष्टों के कारण,
इसकी छवि धूमिल हुई।
समयोपरांत फिर एक बार इस धरा पर,
नियति ने भारत–भू पर महापुरूषों को भेजा है।
आज विश्व के कोने–कोने में,
युद्ध की ज्वाला धधक रही ।
सारा विश्व भारत की ओर निहार रहा,
दिश–निर्देश पाने को, विश्वगुरू की ओर निहार रहा ।
यहाँ लोकतंत्र, प्रजातंत्र है, अनुशासन की तस्वीर है,
एक देश महान है, भारत जिसका नाम है।।

## ‘दर्पण’ आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक (84वां-85वां-86वां सयुंक्तांक) का विमोचन

बाएं से दाएं : श्री विश्वरूप पाल (सहायक निदेशक/राजभाषा), श्री रवीन्द्र पत्तार (प्रधान महालेखाकार-प्रथम), सुश्री गीताली तारे (प्रधान महालेखाकार-द्वितीय), सुश्री सरिता गुप्ता (वरि. उप-महालेखाकार/निधि), श्री सुनील कुमार सोनी (उप-महालेखाकार/प्रशासन-प्रथम) एवं श्री श्याम सुंदर शर्मा (उप-महालेखाकार/प्रशासन-द्वितीय)

# हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2024

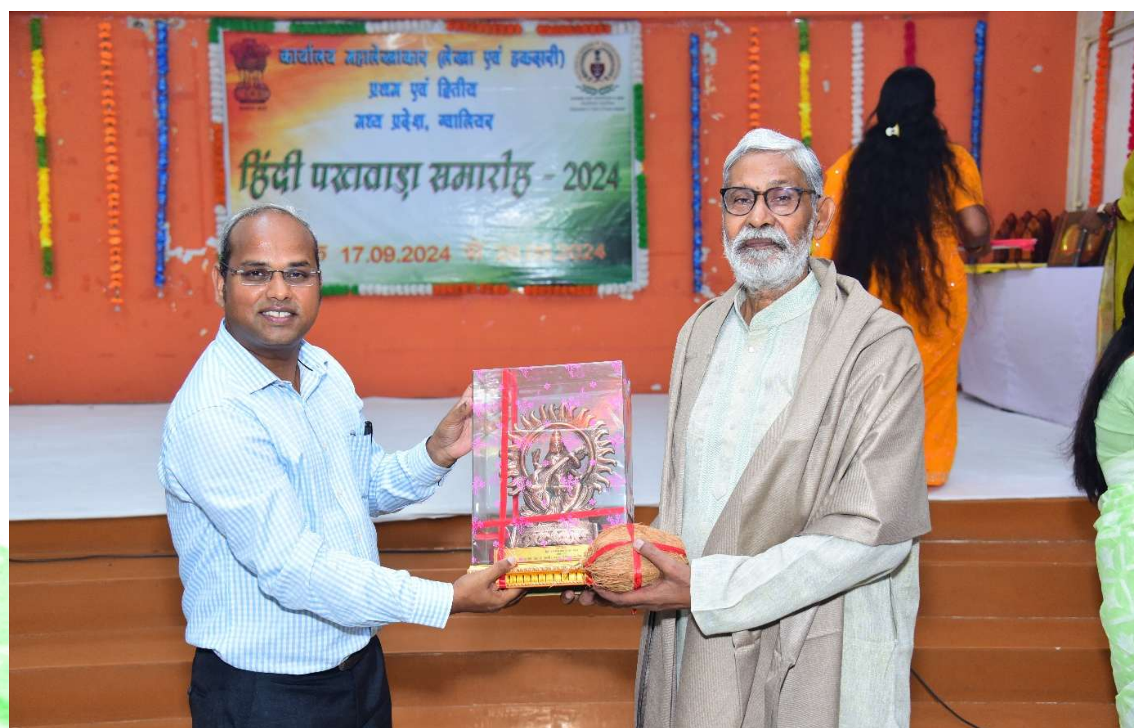

**श्री सिद्धार्थ बोन्दाडे, महालेखाकार (बायीं ओर) मुख्य अतिथि डॉ. भगवान स्वरूप शर्मा "चैतन्य" का सम्मान करते हुए**

श्री दीनदयाल वर्मा, वरिष्ठ उप-महालेखाकार/प्रशासन-II (बायीं ओर) महालेखाकार महोदय का सम्मान करते हुए

श्री रमेश कुमार मेंदीरत्ता, व.ले.अ./प्रशा (दायीं ओर) वरिष्ठ उप-महालेखाकार/प्रशासन महोदय का सम्मान करते हुए

श्री विश्वरूप पाल, सहा. निदेशक/राजभाषा (दायीं ओर) श्री हरजिन्दर सिंह, उपमहालेखाकार/प्रशासन महोदय का सम्मान करते हुए

श्री नीरज कुमार, सहा. निदेशक/राजभाषा (दायीं ओर) श्री सर्वोत्तम श्रीवास्तव, उपमहालेखाकार/लेखा एवं वी.एल.सी. महोदय का सम्मान करते हुए

श्री हुलकर सिंह परस्ते, वरि. लेखा अधिकारी/कल्याण मंच संचालन करते हुए

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2024

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

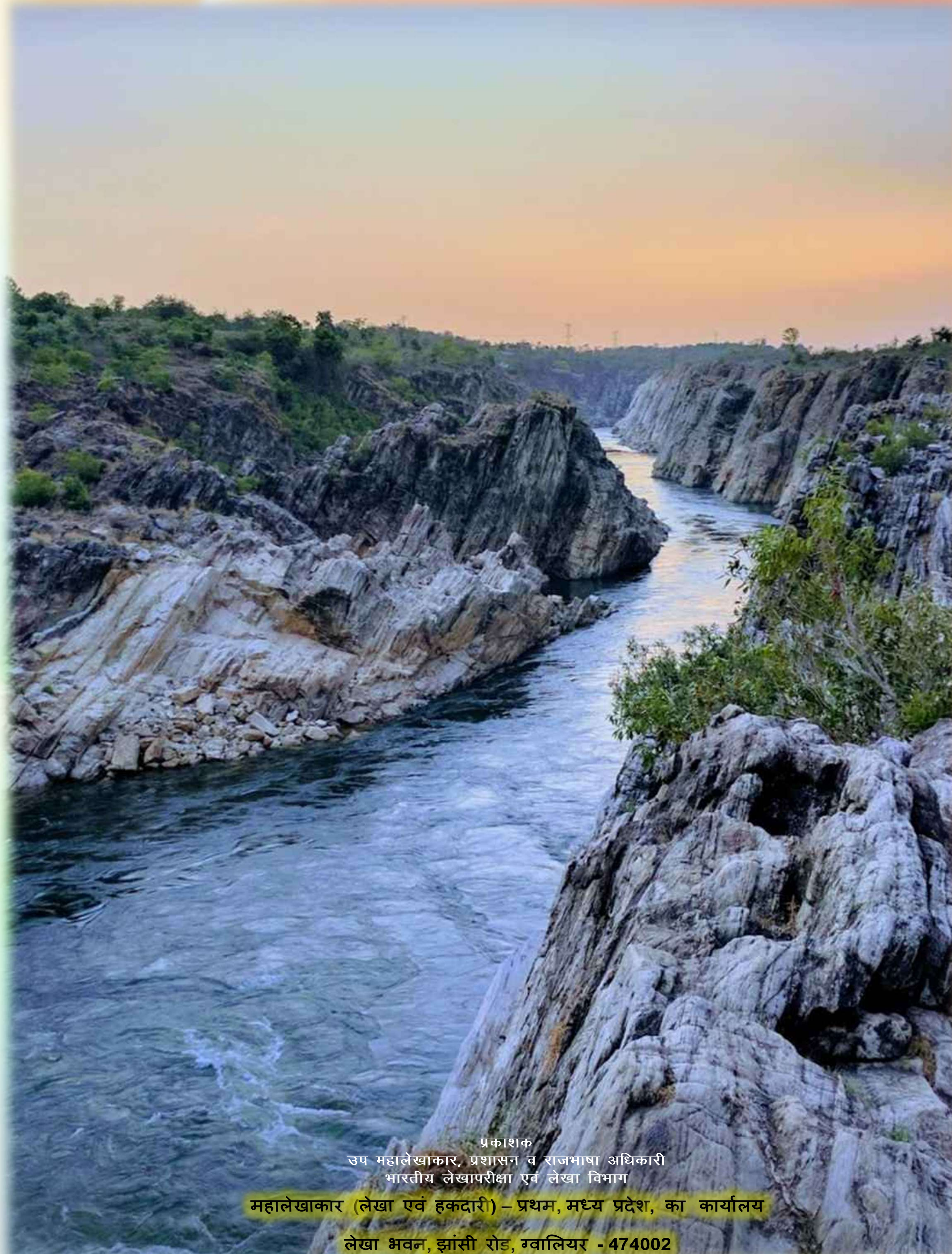


प्रकाशक

उप महालेखाकार, प्रशासन व राजभाषा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

**महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) – प्रथम, मध्य प्रदेश, का कार्यालय**

**लेखा भवन, झांसी रोड, ग्वालियर - 474002**